मरकज़े तसव्वुफ

की तरफ से ये

PDF FILE

का नज़राना जनाब

सूफी नौशाद ग़यासी

की तरफ से

ख़िदमते ख़लक़

के लिये पेश किया जा रहा है।

इस्लाम के पाँच बुनियादी कामों, तौहीद - नमाज़ - रोज़ा - हज और ज़कात
की हकीकत पर सरकार गरीब नवाज़ की अपने जानशीन

सरकार ख़्वाजा कुतबुद्दीन बा-इख़्त्यार काकी कु.सि.अ.

को दी गयी तालीम का हिन्दी तर्जुमा !

असरारे हक़ीक़ी

हक़ीक़त के राज़

साथ ही साथ, सरकार ख़्वाजा ग़रीब नवाज ने जो अपने ख़लीफा और
जानशीन सरकार ख़्वाजा **कुतबुद्दीन बा-इख़्त्यार काकी** को हकीकत
के राज़ों से भरे जो फारसी में सात ख़त लिखे उनका हिन्दी में तर्जुमा !

मरकज़े तसव्वुफ

ख़ानकाह शरीफ: कादरिया-शुत्तारिया-चिश्तिया

1011-E-First, दरगााह शरीफ, महरौली, नई दिल्ली-110030

दरगाह
ख्वाजा कुतबुद्दीन बा-इख्त्यार काकी
रह.अ.
महरौली, नई दिल्ली-110030

इस्लाम के पाँच बुनियादी कामों,

तौहीद - नमाज़ - रोज़ा - हज और ज़कात

की हकीकत पर सरकार गरीब नवाज़ की अपने जानशीन

सरकार ख़्वाजा कुतबुद्दीन बा-इख़्त्यार काकी कु.सि.अ.

को दी गयी तालीम का हिन्दी तर्जुमा !

असरारे हक़ीक़ी

★ हक़ीक़त के राज़ ★

साथ ही साथ, सरकार ख़्वाजा ग़रीब नवाज ने जो अपने

★ ख़लीफा और जानशीन ★

सरकार ख़्वाजा कुतबुद्दीन बा–इख़्त्यार काकी को हकीकत

के राज़ों से भरे जो फारसी में सात ख़त लिखे उनका हिन्दी में तर्जुमा !

मरकज़े तसव्वुफ

खानकाह शरीफ: कादरिया-शुत्तारिया-चिश्तिया

1011-E-First, दरगाह शरीफ, महरौली, नई दिल्ली-110030

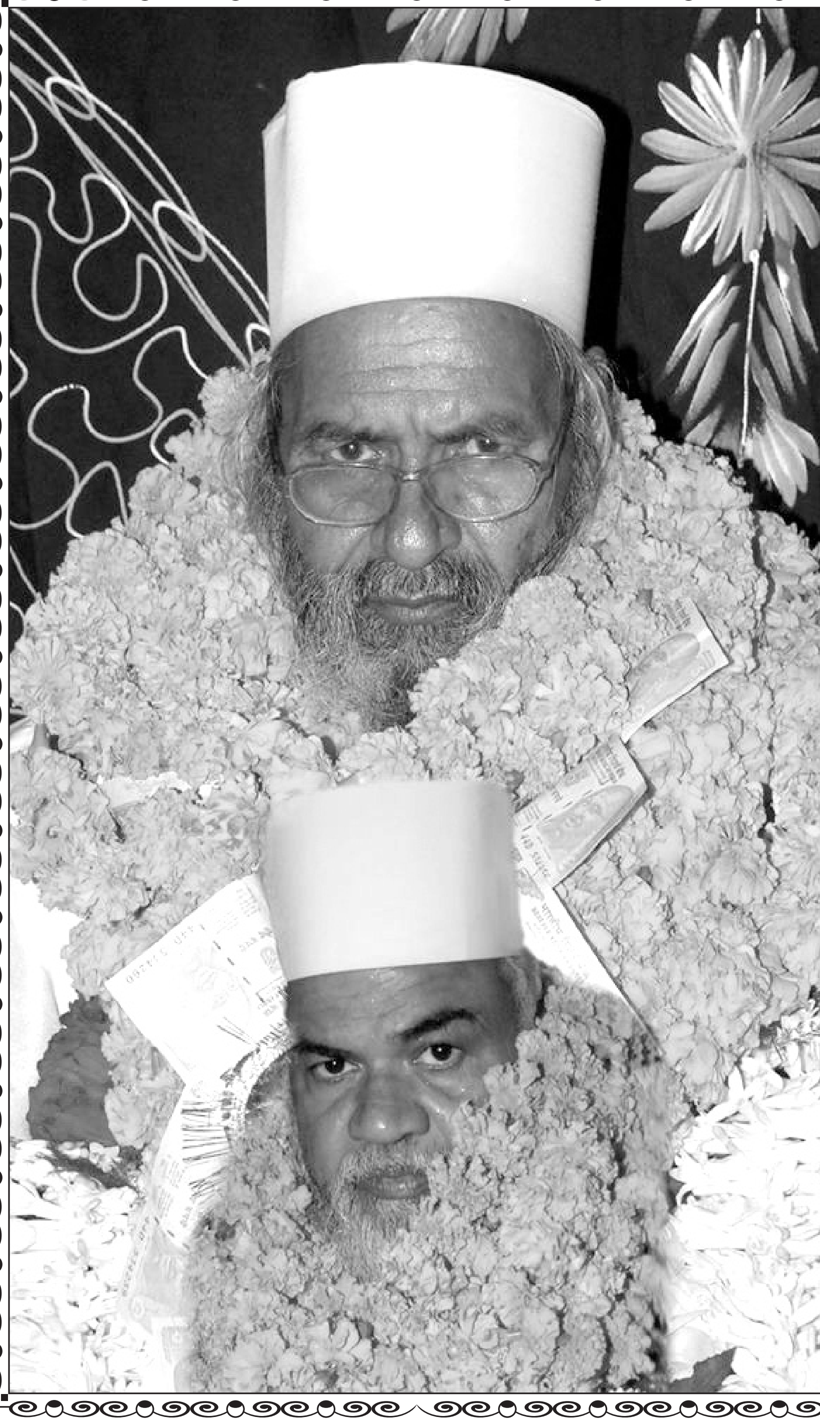

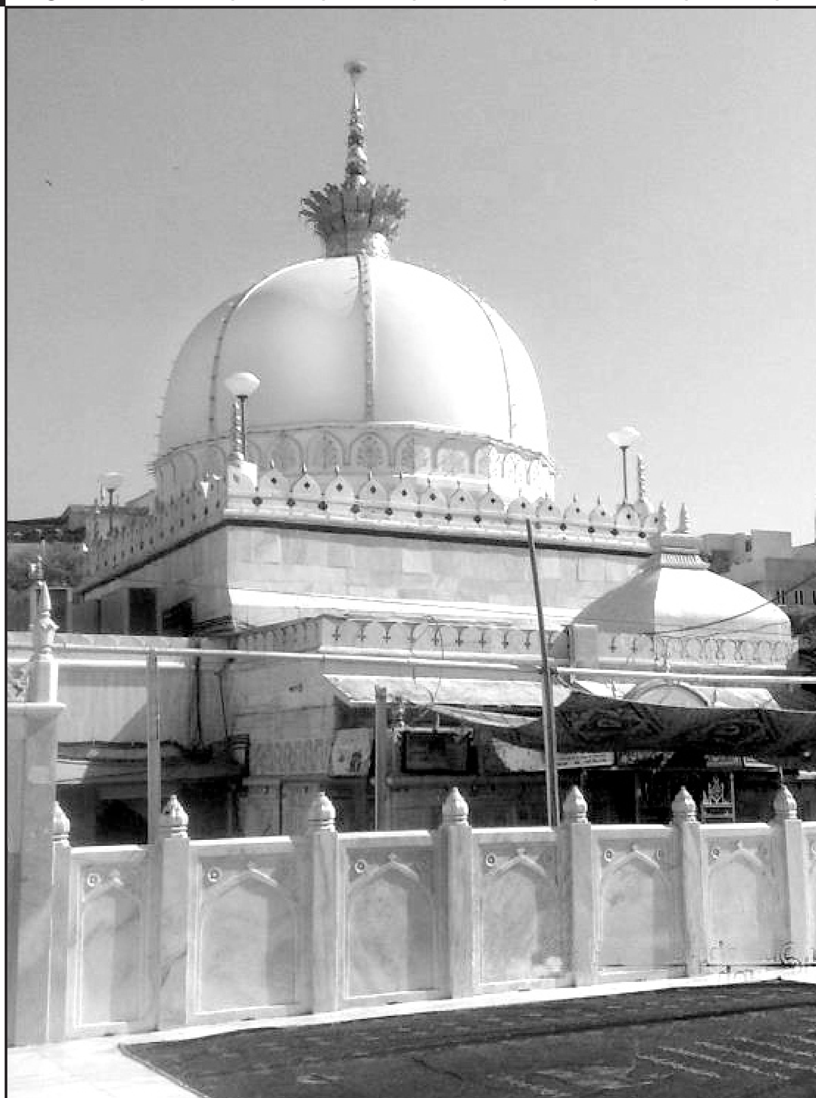

दरगाह हज़रत सुलतानुल हिन्द
कुतुबुल औलिया हुज़ूर ग़रीब नवाज़
ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती (कु.सि.अ.)

फ़ेहरिस्त मज़ामीन

नम्बर	मज़मून	पेज नम्बर
1.	दिल से	5
2.	कलमा तय्यबा की हकीकत	10
3.	नमाज़ की हकीकत	21
4.	रोज़े की हकीकत	32
5.	हज की हकीकत	41
6.	पहला राज़	52
7.	दूसरा राज़	56
8.	तीसरा राज़	58
9.	चौथा राज़	60
10.	पाचवाँ राज़	62
11.	छठा राज़	70
12.	सातवाँ राज़	72
13.	कुछ सवाल	74

दिल से

अल्लाह ही के नाम से शुरू करते है जो बड़ा मेहरबान और निहायत रहम वाला है और उसी से मदद चाहते हैं!

सब तारीफें अल्लाह ही की है जिसने अपने लिये अपने कलाम में फरमाया ''अल्लाह ही तो है जिसने तुम्हें तीन गहरे अंधेरों में पैदा किया फिर तुम कहाँ फिरे जाते हो'' और हमारे लिये फरमाया ''तुम जहाँ कहीं भी हो मै तुम्हारे साथ हूँ''! और फरमाया ''हम मरने वाले के तुमसे भी करीब होते हैं लेकिन तुम नहीं देखते'' यानि हमसे तकाजा किया है के हम उसे देखने की कोशिश करें और देख लें! यहीं इसी दुनिया में रहते हुए, – लेकिन अफसोस – रस्मी बातें – रिवाजों और गलत और झूठे इल्म – दुनिया भर के फिरके और उनकी आपस की लड़ाई – बस ''कहो के सब कुछ अल्लाह की तरफ से है'' फिर तो सब से बेहतर अल्लाह तआला की मर्जी में ही खुश रहना है!

इस दुनिया में रहकर ये देखा और पाया के हम अल्लाह तआला और उसके रसूल हज़रते मोहम्मद स.अ.व. के हुक्मों को नहीं मानते, बल्कि उनके हुक्मों में बदलाव करके, उन हुक्मों में बहुत ज्यादा मिलावट करके, हमारे पास जो रस्मी इस्लाम पहुँचता है हम उसको मानते हैं हम हकीकत में इस्लाम के बुनियादी कामों, तौहीद – नमाज़ – रोज़ा – हज और ज़कात की हकीकत को ही नहीं जानते – हम ये सारे काम उस तरीके से करते हैं जैसे आम लोग करते है उस तरीके से नहीं करते जो

तरीका अल्लाह तआला और उसके रसूल स.अ.व. ने हमें बताया है! इसीलिये हमारी इबादतों में से मोहब्बत - मीठा दर्द और मिठास खत्म हो गई है और हमारी इबादतें बेजान और रूखी-सूखी हो गयी है!

इसके अलावा जरूरी और समझने के लायक ये बात भी है कि अल्लाह तआला और उसके पैग़म्बर हज़रत मोहम्मद स.अ.व. ने हमारी इबादतों का जो बदला देने का वादा हमसे किया है वो पूरा क्यों नहीं होता, के नमाज़ मोमिन की अल्लाह से मुलाकात (मैराज) है तो हमारी नमाज़ में अल्लाह से मुलाकात क्यों नहीं होती? हमसे बारीय तआला ने वायदा किया है के रोज़े का बदला मैं खुद हूँ तो फिर रोज़े रखने के के बाद भी अल्लाह क्यूँकर हमारा नहीं होता? क्यों हज करने के बाद भी इन्सान बस नाम का ही हाजी हो जाता है, हम अन्दर से पाक नहीं होते? क्यों जकात देने के बाद भी हमारा माल हिफाजत में नहीं रहता?

इन सब की वजह ये है के हमने (तौहीद) (अल्लाह के एक होने को सबसे पहले जानना) तो छोड़ दिया और और बाकी काम पकड़ लिये जो सबसे पहला और सबसे जरूरी काम है उसे ही भूल गये - उसे ही छोड़ दिया!

दूसरे ये के हमें जो इबादतों के कुबूल होने की अन्दर की और बाहर की शर्ते बतायी गयी है उन्हें हम पूरा ही नहीं करते क्योंकि हम वो शर्ते जानते ही नहीं, हमारे कुछ ज़ाहिरी आलिम हमें इस बारे में बताते भी नहीं इसलिये जब हमारी इबादत - इबादत ही नहीं है तो अल्लाह तआला, हमसे किया गया अपना

वायदा कैसे पूरा करें – ऐसा क्यों और कैसे हो सकता है के हम तो, जो वायदा और अहद हमने किया है वो तो पूरा ना करें और अल्लाह तआला ने जो वायदा किया है उसके पूरा ना होने की शिकायत दिल में रखें? जबकि अल्लाह तआला ने कुरआन शरीफ में फरमा दिया है " तुम अपना अहद और वायदा पूरा करो तो मैं अपना अहद और वायदा पूरा करूँगा " – बस हमें अपना अहद और वायदा पूरा करने – अन्दर से पाक होने – रस्मों–रिवाजों को छोड़ने और इबादत की, अन्दर की और बाहर की सब शर्तो – उसूलों – और कानून को जानकर उनको पूरा करने के बाद, हकीकत की इबादत ही करनी चाहिये और ये तब ही हो सकता है के जब हम अपने – आपको कामिल मुर्शिद के हवाले कर दें!

इसीलिये सरकार मोईनुद्दीन हसन संजरी, गरीब नवाज अजमेरी ने अपने अव्वल ख़लीफा और जानशीन सरकार ख़्वाजा कुतबुद्दीन बा–इख्त्यार को तालीम देने के बहाने हम सब को ये हकीकत की इबादत के तरीके बताये और समझाये हैं दरअसल – तरीकत – मआरफत के जो गहरे राज़ हैं वो हमारे समझने और हम उनपर अमल करें, इसलिये है!

अगर हम ये समझें के ये रूहानी इल्म की तालीम सरकार गरीब नवाज़ ने सरकार बा–इख्त्यार काकी को दी और हम इसे तकरीर के तौर पर इस्तेमाल करें और मुरीदों को सुनाने लगें (और ऐसा ही होगा) तो हम असली मकसद से चूक गये और भूल गये – ये गहरे राज़ों से भरी तालीम हमारे समझने और अमल करने के

लिये है – बस हमारे समझने और अमल करने के लिये है। हमारे समझ जाने और अमल करने ही से सरकार गरीब नवाज़ और सरकार कुतबुद्दीन बा – इख्त्यार काकी को खुशी हासिल होगी! और हमें इन नामों की नज़दीकी हासिल होगी और दोनों जहानों का फायदा अता होगा – आमीन

आईये हम सब मिलकर अहद – इरादा और वायदा करते हैं के हम इस किताब में दी गयी इबादतों की हकीकत को समझकर, अन्दर और बाहर से पाक होकर ही, इबादतों की सब अन्दर और बाहर की शर्तो को समझ कर अच्छी तरह जानकर ही इबादत, हकीकत की इबादत करेंगे! आमीन

हम शुक्रिया अदा करते हैं इस्म सरकार ख़्वाजा मोईनुद्दीन हसन संजरी और इस्म सरकार ख़्वाजा कुतबुद्दीन बा–इख्त्यार काकी का के इन नामों के जरिये, अमानत के तौर पर रखी गयी ये तालीम हम तक पहुँची!

याद रखा जाये के जिस भी इन्सान को ये तालीम समझ में आ जाये और वो इस पर अमल शुरू कर दे वो ये यकीन कर ले – मान ले के उसे अल्लाह तआला की कुदरत ने तसव्वुफ – अन्दर के इल्म की तबलीग़ के लिये चुन लिया है कुबूल कर लिया है!

ए हमारे रब तू इसे कुबूल फरमा क्योंकि तू सुनने और जानने वाला है और हमारी तौबा को कुबूल फरमा! आमीन – शुक्रिया

दरगाह सरकार ख़्वाजा कुतबुद्दीन बा-इख्त्यार काकी कु.सि.अ.

ख़ादिमुल फुकरा-बन्दाये मिस्कीन सूफी गयासुद्दीन

मरकज़े तसव्वुफ-खानकाह शरीफ

मकान नं. 1011-ई-1-वार्ड नं. 7

दरगाह सरकार ख़्वाजा कुतबुद्दीन बा-इख्तयार काकी कु.सि.अ.

महरौली, नई दिल्ली-110030   फोन : 07838116286

सय्यद अमीरूद्दीन

दरगाह शरीफ, महरौली, नई दिल्ली -110030

फोन : 09899943607

शुरू अल्लाह के नाम के साथ-साथ जो बड़ा मेहरबान और निहायत रहम वाला है।

पहला ख़त

जो कि सरकार ग़रीब नवाज़ ने अपने अव्वल खलीफा और जा-नशीन सरकार ख़्वाजा कुतबुद्दीन बा-इख़्यार काकी कु.सि.अ. को लिखा।

मोहब्बत:- जिनको यक़ीन हो गया उनके हमराज़-भाई ख़्वाजा कुतबुद्दीन देहलवी, रब्बुल आलामीन हर काम में तुम्हारी राहनुमाई फरमाये -तरफ से-फक़ीर मोइनुद्दीन चिश्ती।

कलमा तय्यबा की हक़ीक़त

जान लो-समझ लो के तौहीद (अल्लाह के एक होने को जानना) के बारे में कुछ राज़ और हिदायत के कुछ ख़ास और बारीक इशारे इस ख़ाकसार को बारगाहे रसुले ख़ुदा हज़रत अहमदे मुज्तबा मोहम्मद मुस्तफा स.अ.व. से रूहानी फैज़ के तौर पर हासिल हुए है जिन पर मेरा पूरा भरोसा और यक़ीन है इन्हें बहुत ग़ौर से सुनो और समझ लो।

एक रोज़ का वाक्या है के सरकारे दो आलम, हज़रत अबु-बकर, हज़रत उसमान, हज़रत अली, हज़रत इमाम हसन, हज़रत इमाम हुसैन, हज़रत अनस, हज़रत अब्दुल्लाह बिन

मसुद, हज़रत ख़ालिद, हज़रत बिलाल और बाक़ी ख़ास असहाबियों (सोहबत मे रहने वालों) से अल्लाह तआला की पहचान करने के बारे में गहरी हक़ीक़त और छुपे हुए राज़ बयान फरमा रहे थे लेकिन हज़रत उमर इस मजलिस में हाज़िर ना थे अभी सरकारे दो आलम अल्लाह तआला की पहचान करने के बारे में तरीके और गहरे राज़ और हक़ीक़त ब्यान ही फरमा रहे थे इतने में हज़रत उमर भी इस मजलिस में हाज़िर हुए, सरकारे दो आलम ने अपनी ज़बान को इशारा करके कहा ‘‘ए ज़बान अब बस कर दे’’ कुछ असहाबियों को तआज्जुब हुआ और उनके दिल में ये ख़्याल पैदा हुआ के शायद सरकारे दो आलम हज़रत उमर को ये अल्लाह तआला की पहचान करने के गहरे राज़ बताना नहीं चाहते। हज़रत अबु-बकर और बाकी के नज़दीकी असहाबियों ने सरकारे दो आलम की ख़िदमत में ये अर्ज किया कि ये क्या मामला है? कि अभी जो आप अल्लाह तआला की पहचान और गहरी हक़ीक़तें ब्यान फरमा रहे थे वो गहरी राज़दार बातें आपने हज़रत उमर से छुपा ली।

सरकारे दो आलम ने फरमाया के मैंने उमर से कोई राज़ छुपाया नहीं है बल्कि बात ये है के अगर दूध पीने वाले मासूम बच्चे को भारी खाना-गोश्त, हलवा या तली हुई चीज़ें खिलाई जाये तो वो खाना उस मासूम बच्चे के लिये नुकसान देने वाला बन जाता है लेकिन जब वो बच्चा जवान हो जाये तो उसे वो

चीज़ें खिलाई जा सकती हैं।

अब सरकारे दो आलम हज़रत उमर से उनकी अन्दर की समझने की का़बलियत के मुताबिक़ उनसे कुछ और अल्लाह की पहचान के राज़ ब्यान करने लगे और मकामे जबरूत वा मकामे लाहूत की हकी़क़तें और बारिकियाँ समझाने लगे।

सरकारे दो आलम ने फरमाया ''ए उमर जिस शख्स को अल्लाह तआला की पहचान हासिल हो जाती है उस को मुँह से अल्लाह-अल्लाह कहने और दोहराने की ज़रूरत नहीं रहती और जो मुँह से अल्लाह-अल्लाह कहता है तो समझ लो कि उसे अभी अल्लाह की पहचान नहीं हुई है।

हज़रत उमर ने अर्ज़ किया के हज़रत ये कैसी अल्लाह की पहचान हुई के इन्सान अपने मालिक का नाम ही न ले और उसकी याद को छोड़ दे? सरकारे दो आलम ने जवाब दिया के कुरान में अल्लाह तआला ने फरमाया ''मैं तुम्हारे साथ हूँ जहाँ कहीं भी तुम हो''

बस ए उमर जो हर वक्त हमारे साथ हो और कभी नज़र से ओझल न हो उसका याद करना क्यों ज़रूरी है।

हज़रत उमर ने अर्ज़ किया, अल्लाह तआला हमारे साथ कहाँ है?

सरकारे दो आलम ने जवाब फरमाया के ''इन्सान के दिल में''

हज़रत उमर ने अर्ज़ किया, के इन्सान का दिल कहाँ है?

सरकारे दो आलम ने फरमाया के इन्सान के कल्ब में-लेकिन याद रहे-दिल दो किस्म का होता है एक नकली दिल और एक हकीकी दिल। ए उमर हकीकी दिल वो है जो

ना दाहिनी तरफ है ना बायीं तरफ, ना उपर की तरफ है ना नीचे की तरफ, ना दूर है ना करीब, लेकिन इस असली दिल की पहचान कोई आसान काम नहीं है इसकी पहचान हो जाना बस कुछ उन लोगों का हिस्सा है जो हमेशा अल्लाह की ख़िदमत में हाज़िर रहते हैं। क्योंकि पूरा और हकीकत में सच्चा, अन्दर से ईमान वाला (मोमिन हकीकत में अर्श ही होता है) ''मोमिन का (कल्ब) अल्लाह का अर्श है।''

इसलिये सरकारे दो आलम ने फरमाया मोमिन (ईमान वाले) के दिल मे हमेशा खुफिया ज़िक्र (हमेशा, अन्दर मौजूद ज़िक्र) क़ायम रहता है इसलिये ईमान वाले को हमेशा की ज़िन्दगी (ना ख़त्म होने वाली) ज़िन्दगी हासिल हो जाती है और मुसलमान का दिल इस क़िस्म के ज़िक्र से नावाक़िफ और ग़ाफिल होता है इसलिये वो हक़ीक़त में मुर्दो में गिना जाता है।

फिर हज़रत उमर ने सवाल किया के या रसूलल्लाह। मोमिन और मुसलमान में क्या फर्क है? हुज़ूर सरकारे दो आलम ने जवाब दिया के मोमिन अल्लाह को देख लेने वाला, जान लेने वाला और पहचान लेने वाला होता है और उसमें ये ख़ासियत होती है के ज़्यादातर ख़ामोश और अन्दर से यादे इलाही (अल्लाह की याद) में डूबा रहता है और आम मुसलमान कोशिश करने वाला और अन्दर से सूखा होता है।

इसके बाद सरकारे दो आलम ने फरमाया–मोमिन वो

नहीं है जो मस्जिदों मे जमा होते है और सिर्फ ज़ुबान से ''ला इलाह इल्लल्लाह'' कहते हैं। ए उमर – ऐसे कलमा पढ़ने वाले जो कि कलमे की हकीकत को ही नहीं जानते और कलमे के असली मायने से ही बेख़बर हैं वो मोमिन नहीं है बल्कि मुनाफिक (दिल में कुछ और बाहर और कुछ,–फर्क रखने वाले) हैं। क्योंकि ज़ुबान से तो ये कलमा ''ला इलाह इल्लल्लाह'' का इकरार करते हैं लेकिन कलमे के असली मायने और हकीकत को नहीं जानते। इन्हें खा़क भी पता नहीं के कलमे का असली मक़सद और तकाज़ा क्या है? कलमा क्या चीज़ है? यानि ''नहीं है कोई इबादत के लायक अल्लाह के सिवा'' इसको ज़ुबानी तौर पर तो कह देते हैं लेकिन इनको ये ख़बर ही नहीं के कलमे मे किस चीज़ को मना किया गया है और किस चीज़ को साबित किया गया है। ऐसा कलमा पढ़ना जिसमें शक भरा हो शिर्क है और शिर्क और शक कुफ्र है बस ऐसे कलमा पढ़ने वाले काफिर हैं क्योंकि इन्हें ये नहीं मालूम के कलमे में किस को मना किया गया है और किस को साबित किया गया है।

हज़रत उमर ने फिर अर्ज़ किया के फिर कलमा–ए–तय्यब का असली मक़सद क्या है?

जनाब सरकारे दो आलम ने फरमाया के कलमे के असली मायने ये है के – एक और बस एक – जिसका कोई शामिल नहीं है उसके अलावा दुनिया में कोई मौजूद ही नहीं है और हज़रत मोहम्मद मुस्तफा स.अ.व. मज़हरे ख़ुदा (ख़ुदा को ज़ाहिर करने वाले – ख़ुदा जिनके जरिये ज़ाहिर हुआ, – ख़ुदा ने ख़ुद को ज़ाहिर करने के लिये जिन्हें पसन्द किया) है! बस

अल्लाह और उसके दीदार की चाहत रखने वाले को चाहिये के ''अल्लाह के सिवा कोई है'' इसका ख्याल भी ना आने दे और बस एक और सिर्फ एक अल्लाह को हर जगह मौजूद समझे इसलिये कुरआन में फरमाया गया है ''जिधर भी देखो हर तरफ अल्लाह का ही ज़ाहिर होना है ''

तजल्ली तेरी ज़ात की सू बा सू है!
जिधर देखता हूँ उधर तू ही तू है!

ऐ उमर! जब सालिक (अल्लाह को पहचानने और जानने की राह पर निकलने वाला) अपनी तमाम सिफात (गुण-ख़ासियत) को गुम और गायब समझे और सिर्फ अल्लाह को ही मौजूद समझे उस वक्त वो सालिक, वो मुरीद, कामिल हो जाता है और अपनी मंजिल और मक़सद को पा लेता है। इस मंजिल और मक़सद पर पहुँचकर सालिक व मुरीद की हालत ये हो जाती है के वो इस हदीस का सच्चा गवाही देने वाला बन जाता है के ''जिसने अपने नफ्स को जान लिया उसने अपने रब को जान लिया और उसकी ज़ुबान गूँगी हो गयी''

मतलब ये है अल्लाह को पूरा जान लेने और पहचान लेने वाले पर अन्दर से ख़ामोशी और सुकून छा जाता है क्योंकि तलब-तड़प-मीठा दर्द-अलग होने-जुदा होने का दर्द तभी तक रहते हैं जब तक अल्लाह तआला से मिलन नहीं हो पाता, जब मिलन हो जाता है, बूंद सागर मे मिल जाती है फिर तो अल्लाह को जान लेने, पहचान लेने वाला सही मायनों में

शहन्शाह हो जाता है उसे अल्लाह के सिवा ना किसी से कोई उम्मीद होती है और ना ही किसी का डर। ऐसे ही लोगों के बारे में अल्लाह तआला ने फरमाया है ''औलिया अल्लाह को ना किसी का ख़ौफ है ना किसी का ग़म''

अल्लाह को जान लेने और पहचान लेने वाले की हालत अल्लाह को याद करने से भी आगे निकल जाती है, ऐ उमर यकीन जानो के जब तक मुरीद-सालिक, अल्लाह के सिवा किसी ग़ैर के होने का भी ख्याल दिल से ना निकाल दे वो अल्लाह को जान लेने और पहचान लेने की राह पर एक क़दम भी नहीं रख सकता और ना ही उसको अल्लाह तआला की पहचान हासिल हो सकती है और याद करना भी एक किस्म की दूरी और दो होना (अलग-अलग होना) है और जिन्होंने अल्लाह को जान लिया उनके मुताबिक दूरी और दुई (दो होना-अलग-अलग होना) कुफ्र है ये है कलमाए तय्यब की हकीकत!

अहले फना को नाम से हस्ती के नंग है।
लोहे मज़ार पर भी मेरी छाती पे संग है।

फारिग़ होकर बैठ फिकर से दोनों जहान की।
ख़तरा जो है सो आईना-ए-दिल पर जंग है।

जब तक सालिक-मुरीद इस हालत और मुकाम तक ना पहुँच जाए उस वक्त तक सालिक-मुरीद सच्चा अल्लाह

को एक जानने वाला नहीं बन सकता और अपने ''अल्लाह को एक जानने के दावा करने'' में झूठा है – शुक्रिया

सूफी गयासुद्दीन की गुज़ारिश : दिली दोस्त, मेरे भाई, हमने पढ़ा और देखा और समझा के सरकार गरीब नवाज़ ने अपने रूहानी वारिस और ख़लीफा हज़रत कुतबुद्दीन बा-इख़्तियार को कितने प्यारे और मीठे नामों से पुकार कर ख़त की शुरूआत की, इन मीठे नामों से पुकारना, साबित करता है उस प्यार और मोहब्बत को जो सरकार ग़रीब नवाज़ को अपने जा-नशीन सरकार बा-इख़्त्यार काकी से है। आइये हम मिलकर इस रिश्ते की मोहब्बत और मिठास को महसूस भी करते हैं।

सरकार ग़रीब नवाज़ अपने रूहानी वारिस सरकार बा-इख़्त्यार काकी से कितनी मोहब्बत रखते हैं इसकी एक दलील ये भी है के सरकार ग़रीब नवाज़ ने अपने साहिबज़ादे सरकार मौलाना फख़रूद्दीन (सलवाड़-राजस्थान) को ख़ुद ख़िलाफत ना देकर अपने प्यारे सरकार बा-इख़्त्यार काकी से रूहानी इल्म-फैज़ और मकामे ख़िलाफत अता करवाया – ये मोहब्बत और दलीलें हमारे लिये हैं के हम इन पर ग़ौर और फिकर करके कुछ सीखें और अपनी ज़िन्दगी को बेहतरीन बनायें।

अगर हमने सरकार ग़रीब नवाज़ का ये ख़त गौर से पढ़ा और समझा है तो आगे के अलफाज़ों से ये भी साबित हो जाता है के सरकारे दो आलम ने कलमा-ए-तय्यबा की

हकीकत और तौहीद (अल्लाह के एक होने) की तालीम आम तौर पर नहीं दी–बल्कि असहाबियों की अन्दरूनी ताकत और काबलियत को देखकर उसके मुताबिक इल्म अता किया और भाई ये ही राज़ है और फर्क है इल्मे ज़ाहिर में जिसे हम आम तौर पर किताबी इल्म कहते हैं और इल्मे बातिन (अन्दर के इल्म) में। इसके बारे में हज़रत सुलतान बाहू ने फरमाया के बाहर का इल्म छिलके जैसा और अन्दर का इल्म गूदे जैसा होता है बाहर का इल्म दूध जैसा और अन्दर का इल्म मक्खन जैसा होता है तो बस ये साबित हो गया और हमें समझ लेना चाहिये कि इल्म की दो ही क़िस्म हैं एक ज़ाहिरी या बाहर का इल्म – जो किताबों–तकरीरों और बाहर के तरीकों से मिलता है जिससे हम और उलझ जाते हैं और मंज़िल और मक़सद पूरा नहीं होता और एक है इल्मे बातिन जो कि अन्दर का इल्म कहलाता है ये इन्सान की ज़िन्दगी को अंदर से बदलकर इन्सान को वहाँ पहुँचाता है जो कि इन्सान का मक़सद और मंज़िल है यानि अल्लाह तआला की पहचान हो जाना उसे जान जाना।

आगे के अलफाज़ों और तालीम से हमें ये सीखने को मिलता है के मोमिन और मुसलमान में बहुत बड़ा फर्क है अगर हम गौर फिकर के बाद अपने आपको सिर्फ और सिर्फ रस्मों–रिवाज़ तक रहने वाला आम मुसलमान पाते हैं तो हमें सरकार ग़रीब नवाज़ की तालीम को मानकर मोमिन बनने की

कोशिश करनी होगी और सिर्फ रस्मी तौर पर कलमा पढ़ने और बाकी के काम निपटाने की बजाय, हर चीज़ की गहराई में जाकर उसे समझना होगा, अपने आप को अन्दर से पाक करना होगा–रस्मों रिवाज़ को मज़हब समझने की भूल छोड़नी पड़ेगी और इल्मे बातिन (अन्दर का इल्म) सीखना और पाना होगा। हमें ये भी समझना होगा के हमारे पास हकीकी मुसलमान और मोमिन होने की क्या दलीलें और सुबूत हैं क्या हम वैसे इन्सान हैं जैसे इन्सानों को अल्लाह तआला पसंद फरमाता है?

दुआः या अल्लाह हमें हकीकी, अन्दर का इल्म अता फरमा, और उस पर अमल करने की तौफीक़ और हिम्मत अता फरमा! आमीन

हमने सीखाः (1) हमने पढ़ा–समझा और सीख लिया के इस्लाम की तालीम सरकारे दो आलम ने लोगों की क़ाबलियत के मुताबिक़ ही दी।

(2) ये के सरकारे दो आलम के मुताबिक, अल्लाह तआला इन्सान और मोमिन का जो हकीकत का दिल है वहाँ मौजूद है और जो लोग अल्लाह तआला को ज़ाहिरी आसमान के उपर कहीं रहता हुआ ख्याल करते हैं वो सही इल्म ना होने और ग़लत मालूमात होने की वजह से ज्यादा समझदार नहीं हैं।

(3) हमने ये भी सीखा और समझा के ज़िन्दगी का सबसे

बड़ा असली मक़सद अल्लाह तआला की पहचान करना और उसे जान लेना है। और जिसने उसे जान लिया-पहचान लिया उसे फिर ज़ुबानी तौर पर अल्लाह-अल्लाह कहने की ज़रूरत ही नहीं रहती।

(4) हमने सरकार ग़रीब नवाज़ के हवाले से सरकारे दो आलम की इस तालीम को भी समझा के मस्जिदों में जमा होकर - आम तरीकों से सिर्फ ज़ुबानी तौर पर इबादत करने वाले मुसलमान नहीं बल्कि मुनाफिक (दिल में और कुछ - और बाहर से और कुछ-फर्क रखने वाले-ढोंगी) है और शिर्क और कुफ्र करने वाले काफिर है। क्योंकि ये कलमे की हकीकत नहीं जानते, हकीकत के सच्चे मोमिन और मुसलमान सिर्फ वो ही हैं जिन्हें कलमे की हकीकत और असलियत का पता लग गया है।

(5) कलमे की हकीकत और असलियत के मायनों के बारे में हमने सीख लिया-समझ लिया के अल्लाह तआला (एक और बस एक) के अलावा दुनिया में और कोई मौजूद ही नहीं है। और हज़रत मोहम्मद मुस्तफा स.अ.व. अल्लाह को ज़ाहिर करने वाले हैं। याद रहे (हैं) थे नहीं (हैं)! तो मेरे भाई हमें खुद को ही चैक करना है! जाँचना है! आँकना है! के हम कलमे के आम मायनो के अलावा कलमे के असली मायने जानते हैं या नहीं? कहीं हम नाम के सिर्फ रस्मी मुसलमान तो नहीं हैं?????

नमाज़ की हक़ीक़त

हकीकत की नमाज़ के बारे में सरकारे दो आलम हज़रत मोहम्मद मुस्तफा स.अ.व. ने फरमाया ए उमर ''जब तक कल्ब (हकीकत का दिल) हाज़िर और मौजूद ना रहे नमाज़ नहीं होती''

बाद में सरकारे दो आलम ने फरमाया नमाज़ दो क़िस्म की होती है एक नमाज़ ज़ाहिरी किताबों की मालूमात रखने वाले और इस्लामी क़ानून के जानने वाले और सूखे़ कोशिश करने वालों की होती है जो सिर्फ ज़ुबानी और हाथ-पाँव हिलाने तक ही होती है और इस से अल्लाह से मिल जाना -या उसको जान जाना-या उसको पहचान जाना नहीं होता के ये ही वजह है के इस नमाज़ की पहुँच सिर्फ आलमे मलकूत नफसानी (फरिश्तों की दुनियाँ, जो नफस-ख्वाहिशात से ताल्लुक रखती है वो दुनिया) तक ही होती है दूसरी नमाज़-नबियो-अल्लाह के वलियों और खलीफाओं की होती है जो हकीकत के दिल को हाजिर रख कर अदा की जाती है इसका बदला अल्लाह से मिल जाना है और इसकी पहुँच आलमे जबरूत रहमानी (अल्लाह के सिफाती नाम ''रहमान'' की बड़े और अज़ीम-महानता रखने वाली दुनिया) तक होती है। ऐ उमर! हकीकत की नमाज़ दरअसल यही 'रहमान'' की दुनिया से ताल्लुक रखने वाली नमाज़ है। और

जो ये आम लोग नमाज़ पढ़ते हैं और हकीकत के दिल को हाज़िर रखे बिना पढ़ते हैं ये नमाज़ नफसानी "ख्वाहिश-चाहत-लालच" से भरी नमाज़ है रहमानी नमाज़ नहीं है। सरकार ए दो आलम ने फरमाया बाहर के इल्म के पढ़े-लिखे, बाहर की दिखने वाली चीज़ों को पूजने वाले और ढोंगी नकली सूफी खूब (झुब्बा) लम्बा चोगा और पगड़ी साफा बाँधकर बाहर की शान और दिखावा करके सिर्फ ढोंग की नमाज़ पढ़ते हैं इनकी अपनी नियत खुद को ही पसन्द करने वाली होती है और ये अन्दर से घमण्डी और ज़रा से लालच में फिसल जाने वाले होते हैं इनकी नमाज़ कोई भी सच्चाई या हकीकत नहीं रखती क्योंकि ये लोग (नफ्से-अम्मारा-बुराई की तरफ ले जाने वाला नफ्स) के बन्दे होते हैं। और जो आदमी नफ्से अम्मारा (बुराई की तरफ ले जाने वाला नफ्स) का ग़ुलाम होता है। वो दिखने मे इन्सान लेकिन दिल से-अन्दर से शैतान ही होता है और शैतान तो काफिर और राह से भटका हुआ ही है इन्हें चाहिये के किसी कामिल मुर्शिद की सोहबत में रहकर अपने दिल को घमण्ड और तमाम बुराइयों से बचकर अपने आपको अन्दर से पाक करें जिन लोगों का दिल शैतान के असर से गुमराह है और वो खुद भी इस बात को नहीं जानते ऐसे लोग हकीकत में राह से भटके हुए, गुमराह और काफिर हैं (ये बात और है के आज के दौर में हर इन्सान अपने आपको गलत इल्म-रस्मी मालूमात और

रिवाज़ों की बुनियाद पर ख़ुद को कामिल और सच्चा मुसलमान समझता है उसे ये मालूम ही नहीं है के हकीकत में मुसलमान किसे कहते हैं–मुतर्जिम) ऐसे लोगों के लिये ज़रूरी है के वो सबसे पहले अल्लाह की पहचान हासिल करें जिससे वो सही मायनों में इन्सान बन जाये और भटकी हुई–ग़लत राह को छोड़कर–सीधी राह पर आ जायें तब ही इन की नमाज़ हकीकत की नमाज़ होगी और यही हकीकत की नमाज़ अल्लाह तआला के यहाँ कुबूल होगी और अगर अच्छी किस्मत के रहते ऐसा हकीकत की नमाज़ पढ़ने हज़ारों–लाखों में से एक भी मिल जाये तो उस की ख़िदमत और सोहबत (सीखने की नियत से उसके साथ रहना अकसीरे अहमर (जैसे सुर्ख खुन फायदा करता है) से भी बेहतर है।

ये गुमराह–भटके हुए हकीकत में बुतों को पूजने वाले हैं और तआज्जुब और हैरानी की बात ये भी है के ये अपने इस तरीके की बुतों को पूजने जैसी हरकत पर, इसको अच्छा समझकर इस पर इतराते (नख़रे दिखाना) भी हैं और आम लोग अन्दर से इतने अन्धे और नादान हैं जो ऐसे नकली ढोंगियों को नमाज़ियों में गिनते हैं ऐसी बिना हकीकत की नमाज़ से क्या फायदा?

हदीसे कुदसी (अल्लाह का फरमान) है कि अंबिया और औलिया हमेशा दिल को हाज़िर रख कर हकीकत की नमाज़ कायम करते हैं!

सरकारे दो आलम ने फरमाया – अंबिया और औलिया की नमाज़ हकीकत में वो नमाज़ होती है के जब वो नमाज़ में, बल्कि हर वक्त ही उनकी पाँचों हवास (देखना–सुनना–बोलना–सुघंना–और छुना) अल्लाह के सिवा सब के लिये बन्द रहते हैं वो देखने में तो सब काम करते नज़र आते हैं लेकिन हकीकत में वो एक लम्हे के लिये भी अल्लाह तआला से अलग नहीं होते और इनका एक–एक सांस अल्लाह की ही याद मे गुज़रता है! वो अपने एक–एक साँस का ख़्याल रखते हैं के कहीं कोई भी एक सांस अल्लाह को याद किये बिना–ना गुज़र जाये यही लोग दरअसल हकीकत के नमाज़ी हैं।

ऐ उमर। हकीकत की नमाज़ ही रहमानी है इसी हकीकत की नमाज़ से अल्लाह तआला से मिलना हो जाता है।

ऐ उमर! अम्बिया अलैहे सलाम और औलिया हमेशा ज़िक्रे खफी (छुपी हुई अन्दर से याद–खुफिया याद) में रहते है। सरकारे दो आलम ने फरमाया ''सिर्फ ज़ुबान से बोलना या याद करना लकलका (सारस की आवाज़–जोर की आवाज़–याद रहे सारस बिना सोचे समझे–बिना दिल को हाज़िर किये आवाज़ करता है) यानि बेकार में आवाज़ करना है और जो ज़िक्र या याद दिल से की जाये वो वसवसा (बदी–बुराई–बुरे ख्यालात) (यहाँ ख्याल रहे के यहाँ दिल से

मकसद नकली दिल से है जो हम पहले पढ़ चुके हैं) और रूह से किया हुआ ज़िक्र या याद अल्लाह तआला को देखने की वजह बनता है और छुपा हुआ जिक्र तो हमेशा हुआ करता है!

ए! उमर छुपा हुआ ख़ुफिया ज़िक्र और हकीकत की नमाज़ तो अपने होने को ही खत्म कर देना है!

''कोशिश करने वालों की नमाज़ सजदा और सुजूद होती है'' ''आशिकों की हकीकी नमाज़ तो अपने होने को ही ख़त्म कर देना होता है!''

यानि अल्लाह के सिवा किसी को मौजूद ना समझना और अल्लाह के सिवा भी कोई है इस ख़्याल को बिल्कुल अपने अन्दर से निकाल देना!

(1) अल्लाह तआला ने अपने करम से मोमिनों को दुनिया के सब आराम दे रखे हैं!

(2) इनके लिये खाना-पीना और पहनना सब हलाल भी है!

(3) बीवी और माल-दौलत-जायदाद रखने की इजाज़त भी है!

(4) इनके लिये शरीयत के मुताबिक राहत और सुकून सब की इजाज़त है!

(5) लेकिन बहुत बड़ा फर्क है इस दुनिया को ही सब कुछ समझकर इसमे डूब जाने वाले में!

(6) इस दुनिया को ही सब कुछ समझकर इसमे डूब कर रह जाने वाला चाहे ज़ाहिर में कितना भी रोज़ा नमाज़

करता रहे लेकिन उसके अन्दर मीठी-मीठी जलन और पिघलने की ताकत नहीं होती (यानि नर्म दिल और अल्लाह से इश्क की मीठी जलन और उसमें नहीं होती-मुतर्जिम)

(7) वो बे-दिली से ये सारे काम करता है उसके दिल में अल्लाह का नूर नहीं होता!

(8) उसका दिल तो दुनिया की मोहब्बत में डूबा है वो तो हकीकत से बिल्कुल बेखबर होकर, ग़ाफिल होकर सो रहा है।

(9) हकीकत के अच्छे इन्सान तो इस दुनिया के काम को भी, अल्लाह का सोंपा हुआ काम समझ कर करते हैं।

(10) बे-दिल से रोज़ा-नमाज़ करने वाले की आरज़ू की बस ये हद है के वो हमेशा इस बुरी और भोंडी दुनिया के लालच में ही रहता है!

(11) और जो सच्चे दिल से सब नेक काम करते हैं उनकी तो मंज़िल और मक़सद यही होता है के बस अल्लाह का दीदार और उससे मुलाकात हो जाये!

(12) और जो लालच से इबादत करते हैं उनका मक़सद तो माल-औलाद-और आरामदेह ज़िंदगी के ज़रिये हों, और सोना-चाँदी और खूबसूरत बीवी हो-बस ये ही लालच होता है!

(13) लेकिन जब दिल में सिर्फ और सिर्फ अल्लाह की मोहब्बत होती है तब दिल अल्लाह के एक होने के नूर से हमेशा भरा रहता है!

सूफी गयासुद्दीन की गुज़ारिश : मेरे दिली दोस्त, मेरे भाई, हमने सरकार गरीब नवाज़ के हवाले से सरकारे दो आलम की इस रूहानी-अन्दरूनी तालीम को पढ़ा-देखा और समझा कि ये जो आमतौर पर नमाज़ पढ़ी जाती है ये नफ्सानी नमाज़ है ये ख्वाहिश और लालच से भरी नमाज़ है इसकी कोई बहुत बड़ी कीमत नहीं है ये तो बस देखा-देखी वाली नमाज़ है ये बात बड़ी ही गहराई से सोचने और समझने वाली है के हम अक्ल के अन्धों की तरह वो पढ़ते है जिसके मायने हम नहीं समझते जैसे हम कोई भी छोटी से छोटी किताब समझकर पढ़ते हैं लेकिन कुरआन शरीफ को बिना समझे ही दोहराते जा रहे हैं के सवाब मिलेगा-सवाब सिर्फ उस शर्त पर ही मिल सकता है जबकि हम कुरआन शरीफ को इस नियत और इरादे के साथ समझकर पढ़े के अल्लाह तआला ने इस में हमारे लिये क्या फरमाया है क्या हुक्म दिये हैं और फिर उन हुक्मों पर अमल करें तब ही सवाब की उम्मीद लगाना बेहतर है वरना बेकार है!

हकीकत की नमाज़ तो (रहमानी नमाज़)है उसके लिये तो सबसे पहली और बड़ी ही जरूरी शर्त है के ''नमाज़ में दिल हाज़िर और मौजूद रहे'' इसके मायने ये हुए हैं के हमें कोई भी ख्याल ना आये हम अल्लाह तआला की याद में इतने गहरे डूब जायें के कोई भी ख्याल आने की गुंजाइश ही ना रहे। हम अल्लाह तआला की याद में इतना गहरा डूब जायें के हमें ये भी पता ना हो के हमारे बराबर में कौन है। इसलिए

सरकारे दो आलम ने साफ-साफ फरमा दिया के ''दिल हाजिर रहे बिना नमाज़ नहीं है '' और ये भी फरमाया के ''नमाज़ मोमिन की मेराज (अल्लाह से मुलाकात) है एक सवाल पैदा होता है के अगर हकीकत में ये आम तौर पर पढ़ी जाने वाली नमाज़ के बारे में ही सरकारे दो आलम ने ''अल्लाह से मुलाकात'' का वादा फरमाया है तो फिर जो लोग सालों से नमाज़ पढ़ रहे हैं उनकी अल्लाह से मुलाकात क्यों कर नहीं हुई?

दरअसल सरकारे दो आलम ने जिस नमाज़ में ''अल्लाह तआला से मुलाकात'' का वादा फरमाया है वो रहमानी नमाज़ है जिसकी अन्दरूनी और बाहरी शर्तो को पूरा करके अल्लाह तआला के वलियों ने अल्लाह तआला से मुलाकात की और हमें इसी नमाज़ को पढ़ने-अदा करने की कोशिश करनी चाहिये इसके लिये हमें पहले ये तैयारी करनी होगी के हम ये सीख जायें के दिमाग़ को ऐसा कैसे बनाया जाता है के उसमें अल्लाह की याद के सिवा और कोई ख्याल ही ना आये और ऐसा मुमकिन है तब जबकि कामिल मुर्शिद की ख़िदमत और सोहबत मिल जाये!

कुछ ज़ाहिरी आलिम और आम कम समझदार लोग ये कहते हैं ''नमाज़ पढ़ते रहो कैसे भी अल्लाह कुबूल करने वाला है'' झुठ है ये बात -गलत है ये बात-ये बात समझदारी की नहीं है झुठी तसल्ली और झूठी उम्मीद है इस बात में। जब इन्सान उन अन्दर की और बाहर की ज़रूरी शर्तो को पुरा ही

नहीं करेगा जो अल्लाह तआला ने और सरकारे दो आलम ने फरमाई है तो क्यों कर नमाज़ कुबूल होगी–हरगिज़ कुबूल नहीं होगी चाहे जितना सर पटकते रहो!

खत़ की आगे की तालीम से हमें ये भी पता चला के आम तौर पर (नफ्सानी नमाज़) पढ़ने वाले हकीकत में बुतों को पुजने वाले जैसे ही है लेकिन वो इस बात को नहीं जानते और इससे भी ज़्यादा हैरानी की बात ये है के वो अपने इस गलत काम से बहुत खुश है!

हकीकत की रहमानी नमाज़ में तो इन्सान की पाँचों हवास काम ही नहीं करती और इन्सान अल्लाह तआला की याद में इतना गहरा डूब जाता है के उसे कोई ख्याल ही नहीं आता है और फिर मेराज (अल्लाह से मुलाकात) होती है!

दुआ : या अल्लाह हमें हकीकत की रहमानी नमाज़ समझने, अदा करने और कायम करने की तौफीक और हिम्मत अता फरमा – आमीन

हमने सीखा: (1) सरकारे दो आलम की रूहानी तालीम जो सरकार ग़रीब नवाज़ के जरिये हम तक पहुँची उससे हमने समझ लिया और सीख लिया के जब तक हकीकत का दिल हाज़िर ना रहे नमाज़ नहीं होती इसलिये हमें पहले हकीकत का दिल नमाज़ में हाज़िर रहे, और कोई ख्याल ना आये, और पूरी तरह से हम अल्लाह तआला की याद में डूब जायें–सबसे पहले ये सीखना होगा! ये सीखने के बाद ही हम हकीकत की नमाज़ अदा करने और कायम करने के

हो सकेंगे!

(2) हमने ये भी सीखा और समझ लिया के एक तो नफ्सानी नमाज़ होती है जिसे रस्मों से सीखकर और बाहरी तरीके अपनाकर-बिना दिल को हाज़िर किये, ख्यालों मे रहकर-पढ़ी जाती है जो आमतौर पर चल रही है इसकी कोई कीमत नहीं है!

> कितनी अजीब है नेकियों की जुस्तजू गालिब
> नमाज़ भी जल्दी में पढ़ते है फिर से गुनाह के लिये

(3) हमने ये भी पढ़ा, समझा और सीख लिया के हकीकत की नमाज़ तो रहमानी नमाज़ ही है जो कि नमाज़ के लिये अन्दर और बाहर की सब शर्तो को पूरा करते हुए, दिल को हाजिर रखकर, बिना ख़्यालों के अल्लाह की याद में डूबकर अदा और कायम की जाती है और इसी नमाज़ के जरिये अल्लाह का दीदार हो सकता है इसी नमाज़ को कायम करने का कुरान शरीफ में हुक्म है और अल्लाह के तमाम वलियों ने यही नमाज़ कायम की है!

(4) भाई, सरकार ग़रीब नवाज़ ने तो, जो तालीम उन्हें रूहानी तरीके से सरकारे दो आलम से मिली उसमें साफ-साफ फरमा दिया के आम तौर पर नमाज़ पढ़ने वाले, बुतों को पुजने वालों के बराबर है जिन्हें नमाज़ की अन्दरूनी और बाहर की शर्तो का पता ही नहीं है और परेशानी इस बात

की है के वो अपने इस काम पर इतराते हैं और बाकी सब लोग भी उनकी तारीफ करते है हमारे ज़ाहिरी आलिम ऐसे हैं के उन्हें खुद ही हकीकत की रहमानी नमाज़ का पता ही नहीं, वो भी जो सुनते-देखते हैं वो तकरीर में हमें सुना देते हैं। बस मामला ये है के हमें खुद भी जागना होगा और सबको जगाना होगा, मानना छोड़कर हकीकत को जानना होगा और सबसे पहले अल्लाह की याद में डूबना सीखना होगा, वरना नमाज़ बेकार हो जायेगी और उसका मक़सद हासिल नहीं होगा!

(5) इसके अलावा हमने ये भी सीख लिया के नमाज़ का असली मक़सद अल्लाह तआला का दीदार होना है अगर हमें नमाज़ में अल्लाह तआला का दीदार नहीं होता तो उसका मक़सद ये हुआ के हम हकीकत की रहमानी नमाज़ जानते ही नहीं और ये हकीकत सरकारे दो आलम की इस सही हदीस से साबित है कि "नमाज़ मोमिन की मेराज (अल्लाह से मुलाकात) है" अब हमें रस्मी मुसलमान बने रहना छोड़ना चाहिये और हकीकत में सच्चा मुसलमान बनने के बाद - मोमिन बनना चाहिये और मोमिन बनने के बाद ही हम इस काबिल हो सकेंगे के हम बिना किसी ख्याल के सिर्फ और सिर्फ अल्लाह तआला की याद में डूबकर नमाज़ अदा कर सकेंगे, कायम कर सकेंगे और यही रहमानी नमाज़ है और ख्याल रहे के कामिल मुर्शिद जो कि रहमानी नमाज़ और सजदा जानता हो उसकी सोहबत और ख़िदमत के बिना ये मुमकिन नहीं है। - शुक्रिया !

रोजे़ की हक़ीक़त

ए उमर! रोजे़ की हकीकी मायने – तारीफ – परिभाषा ये हे के इंसान अपने दिल को सारी की सारी दीनी ख़्वाहिशात मसलन (जन्त–हूर–और सारे आराम) और दुनिया की सब ख़्वाहिशें (कई मकान–गाड़ी–बंगला–माल–सोना–चाँदी) से बन्द रखे क्योंकि ये दोनों किस्म की ख्वाहिशें–चाहत अल्लाह तआला और बन्दे के बीच में परदा–रूकावट है ऐसी चाहत के रहते हुए इन्सान अपनी हकीकत के मालिक अल्लाह तआला से नहीं मिल सकता और दुनिया की चीज़ों की चाहत रखना तो सरासर शिर्क है!

''अल्लाह के सिवा '' का कोई ख़्याल करना, कयामत का डर, जन्नत का लालच, ये सब चीजे़ हकीकत के रोजे़ को ख़त्म कर देने वाली, और तोड़ देने वाली है! हकीकत का रोज़ा तब ही सही रह सकता है जब कि इन्सान अल्लाह के सिवा सब चीजों को अपने दिल से निकाल दे यानि अल्लाह के सिवा की उसे कोई याद ना रहे और हर किस्म की उम्मीद–लालच–चाहत और हर किस्म के डर को अपने अन्दर से निकाल दे!

सरकारे दो आलम ने फरमाया ''अल्लाह तआला के दीदार और मुलाकात के अलावा मुझे किसी भी और चीज़ से मतलब नहीं है हकीकत के रोजे़ का खोलना (इफतार) सिर्फ अल्लाह का दीदार है!''

ए उमर! हकीकत के रोज़े की शुरूआत और उसका खोलना, ध्यान से दिमाग में बैठा लेना चाहिये चाहिये यानि ये जान लेना चाहिये के हकीकत का रोज़ा किस चीज़ से रखा जाता है और किस चीज़ से खोला जाता है!

इसलिये ये समझ लेना चाहिये के हकीकत के रोज़े की शुरूआत ये है के इन्सान को अपनी अन्दरूनी काबलियत और हालत और कैफियत के मुताबिक अल्लाह तआला की पहचान हासिल कर लेनी चाहिये और रोज़े का खोलना, इफ्तार करना ये है के उसे अल्लाह तआला का दीदार हासिल हो! सरकारे दो आलम ने फरमाया के हकीकत का रोज़ा रखने वाले के लिये दो खुशियाँ है एक रोज़ा खोलते वक्त और दूसरी अल्लाह तआला के दीदार - उससे मुलाकात के वक्त।

ऐ उमर! आम लोगों के रोज़े में पहले रोज़ा है और आखिर मे रोज़े का खोलना, लेकिन हकीकत के रोज़े में पहले रोज़े का खोलना है और आखिर मे रोज़ा - देखो अल्लाह की याद में डूबकर - सिर्फ अल्लाह को चाहने वाले, और अल्लाह की तरफ सफर करने वाले हमेशा ही रोज़े में, रोज़े से रहते हैं वो किसी भी वक्त रोज़ा नहीं खोलते क्योंकि हकीकत के रोज़े के लिये ये शर्त नहीं है के रोज़ा खोला जाय - या कभी रोज़ा रखो और कभी रोज़ा खोलो हकीकत का रोज़ा रखने वाले तो हमेशा ही रोज़े से रहते हैं।

ऐ उमर! तमाम आम लोग रोज़ा रखते हैं के जिसमे खाने -पीने और औरत से मिलने से बचना होता है ये हकीकत

का रोज़ा ना होकर – नकली रोज़ा है। इसके ये मायने हैं के अल्लाह के राज़ इनको नहीं मिल पाते वो बाहरी दुनिया की खूबसूरती में घिरे हुए हैं और हकीकत का इन्हें कुछ पता नहीं लेकिन इस नकली रोज़े ''अल्लाह के सिवा'' को नहीं छोड़ा जाता और इन्सान में हर किस्म का डर और ख़्वाहिश रहती है ऐसे रोज़ा रखने वालों का बोलना और करना सब ''अल्लाह के सिवा'' है।

ऐसा नकली रोज़ा कभी भी रहमानी रोज़ा नहीं हो सकता ऐसे नकली रोज़े से इसके अलावा कोई फायदा नहीं होता के बस इन्सान, गरीबों – मिस्कीनों की भूख का अहसास कर सके और उनकी मदद कर सके और इसके अलावा इस ज़ाहिरी और नकली रोज़े से और क्या फायदा हो सकता है?

सरकारे दो आलम ने फरमाया ''बिना मुर्शिद का इन्सान, बिना दीन का इन्सान होता है और बे-दीन इन्सान अल्लाह की पहचान से नावाकिफ होता है इस का किसी भी गिरोह से ताल्लुक नहीं होता और उस का कोई हमदर्द या ग़म दूर करने वाला ना हो – वो हमेशा-ग़फलत, बेहोशी और शैतान के पंजे में रहता है''!

अल्लाह को जान लेने-पहचान लेने वालों की नज़र में वो समझदार और होशियार नहीं होता बल्कि वो एक दूध पीने वाले बच्चे की तरह होता है और ना होने वाले की तरह होता है और जो है ही नहीं उसपर हकीकत की ज़कात क्योंकर होगी बस सबसे पहले ये ज़रूरी है इन्सान उन चीज़ों से आज़ाद हो जाये जो उसको बुराई सिखाती है और बुराई की तरफ ले जाती है! जिससे वो

अल्लाह की पहचान हासिल कर सके और अच्छी अक्ल से काम लेने के काबिल हो कर - हकीकत की ज़कात अदा करने के काबिल हो जाये।

ज़ाहिरी ज़कात जो आम लोगों के माल पर ज़रूरी है उसका सिर्फ ये मकसद है कि अमीर लोग ज़कात के बहाने से गरीब और मिस्कीन लोगों की मदद कर सकें और गरीब और मिस्कीन अपनी ज़िंदगी गुज़ारने का सही से इन्तज़ाम कर सकें!

ऐ! उमर हकीकत के राज़ों से भरा जो पहाड़ है उसकी खबर सिर्फ उन लोगों को ही होती है जो अल्लाह को पहचान जाने वाले होते हैं हकीकत के राज़ों से भरा हुआ पहाड़, हकीकत के राज़ अपने अन्दर समेटे हुए हैं और जिन लोगों को अल्लाह की पहचान हासिल हो जाती है वो इस पहाड़ पर खिले हुए फूलों की तरह होते हैं इन अल्लाह को पहचान जाने वाले लोगों पर ये ज़रूरी है के वो हकीकत के, अन्दर के इल्म के फूलों में से अल्लाह तआला के राज़ों की ज़कात राह से भटके हुए लोगों और नादानों को अता फरमाऐं और अपने को समझदार और सही राह पर मानने वाले गुमराह और भटके हुए लोगों को राह दिखायें क्योंकि हकदार को ही उसका हक देना असली और हकीकत की ज़कात है!

(1) नाम ना होना भी हमारा है और नाम हो जाना भी हमारा
ही है शुरूआत भी हमारी है और खात्मा भी हमारा है!

(2) अन्जाम के वक्त के लिये भरोसा ही हमारा है
तकलीफ भी हमारी है और आराम भी हमारा ही है!

(3) हम तो बेकार ही हो गये और सब काम हम से छुड़ा

लिये गये हकीकत में तो खुद ही खुदा करता सब काम हमारा।

(4) हम तो इश्क के बन्दे है ए मौलवी और पंडित सुनले हम तुमसे नहीं कह सकते के तुम्हारी अक्ल और समझ के मुताबिक जो कुफ्र है हकीकत में तो वो ही इस्लाम है और वो हमारा है।

(5) हम तो रेगिस्तान में ही रहेंगे – बाग में क्यों जायें जबकि बाग में हमारा फूलों के रंग वाला मालिक (मुर्शिद) ही नहीं है।

(6) अपनी तो तकदीर पहले दिन से ही बेहतरीन और अच्छी है बदलता वक्त और परेशानियाँ अब कुछ नहीं बिगाड़ सकते हमारा।

(7) हकीकत मे तो इस्लाम (सभी को सलामत और अच्छा) तब ही मजबूत होगा जबकि हमारा दिल अन्दर से बदलकर पाक हो जाये।

सूफी गयासुद्दीन की गुज़ारिश :– मेरे दिली दोस्तों, मेरे रूहानी भाईयों, हमने सरकार गरीब नवाज़ की रूहानी तालीम में ये पढ़ा समझा और सीख लिया है के आजकल आम लोग जो रोज़ा रखते हैं वो हकीकत का रोज़ा नहीं है।

★ हकीकत का रोज़ा तो वो होता है जिसमें इन्सान दुनिया से ताल्लुक रखने वाली हर चाहत और ख्वाहिश को भुला दे और साथ ही साथ मरने के बाद की चाहतों (जन्नत–हूर) वगैरा सबको ही दिमाग़ से निकाल दे।

✶ हमने ये भी पढ़ा–समझा–सीख लिया के अगर रोज़े के दौरान अल्लाह की याद के सिवा कोई भी चाहत–ख़्वाहिश–लालच (चाहे वो इस दुनिया से ताल्लुक रखती हो या मरने के बाद वाली दुनिया से) आ जाये तो हकीकत का रोज़ा टूट जाता है ख़राब हो जाता है रोज़े में तो बस अल्लाह तआला के दीदार की ही तलब रहनी चाहिये।

✶ हमने समझ लिया के हकीकत के रोज़े की शुरूआत भी अल्लाह का दीदार है और हकीकत के रोज़े का खात्मा भी अल्लाह का दीदार ही है ये जो आम लोग रोज़ा रख रहे हैं ये असली रोज़ा ना होकर नकली रोज़ा है इस रोज़े का मक़सद तो ये है के इन्सान को दूसरों की गरीबी और भूख का अहसास हो सके कुल मिलाकर मकसद ये है के नकली–रस्मी रोज़े से बचना चाहिये और असली रहमानी रोज़ा रखने की कोशिश करनी चाहिये और ये तब ही मुमकिन है के जब हम रोज़े का असली मक़सद, उसका सही तरीका समझें वरना बेकार में भूखा–प्यासा रहना समझदारी नहीं है।

सरकारे दो आलम के फरमान के मुताबिक जिस इन्सान का कोई पीर नहीं होता वो बे–दीन होता है और बे–दीन इन्सान को अल्लाह तआला की पहचान के लिये कामिल पीर होना और उसकी सोहबत में रहकर अन्दर का इल्म सीखना बेहद ज़रूरी है।

हकीकत की जकात से मकसद ये है कि इन्सान दूसरे इन्सान की बुराई ना चाहकर सिर्फ और सिर्फ भला ही चाहे जहाँ तक मुमकिन हो भला ही सोचे–भला ही करे मुसलमान

होने के लिये ये ज़रूरी है कि एक मुसलमान से किसी भी इन्सान का कुछ भी बुरा ना हो।

ये जो आमतौर पर ज़कात दी जाती है इसका मक़सद तो समाज में बराबरी लाना और ग़रीबों की मदद करना है जिससे गरीब लोग आराम से खाने और रहने का इन्तज़ाम कर सकें लेकिन अब तो कुछ लोगों ने मदरसे के नाम से ज़कात वसूल करना अपना पेशा ही बना लिया ये लोग यतीमों का नाम लेकर अपना पेट भरते हैं।

हकीकत की ज़कात तो इन्सान की ज़िंदगी बदल देना है इन्सानों से प्यार और मोहब्बत करना–अच्छे ख्यालात देना, उनके दिमागों से नफरत मिटाने के लिये वक्त देना, बस देना, बिना किसी से कुछ लेने या पाने की चाहत के बिना, बस देना–देना ये ही हकीकत की ज़कात है।

दुआ : या अल्लाह हमें हकीकत के रहमानी रोज़े को समझने, और रोज़े से रहने की तोफीक और – हिम्मत अता फरमा और इस दुनिया में ही अपने दीदार की नेमत अता फरमा! आमीन

हमने सीखाः (1) हमने सरकार गरीब नवाज़ के हवाले से पढ़ा–समझा और सीख लिया के रोज़ा दो किस्म का होता है पहले आम किस्म का नकली या रस्मी रोज़ा तो ये है के खाने–पीने की चीज़े इस्तेमाल ना की जायें और औरत से ना मिला जाये ये रोज़ा नफ्सानी और नकली रोज़ा होता है। लेकिन क्यूँकि आम लोगों को ये पता ही नहीं है के असली रहमानी

रोज़ा क्या होता है और ना ही ज़ाहिरी आलिम इस बारे में उन्हें कुछ बताते है तो आम लोग - ज़ाहिरी तरीका सीखकर बस जाहिरी ढंग से रोज़ा रखते है दरअसल उनकी भी कोई गलती नहीं है उनकी सिर्फ ये कमी है के किसी कामिल मुर्शिद, अन्दर के इल्म के माहिर के पास जाकर ये नहीं जानने की कोशिश करते के हकीकत का रहमानी रोज़ा क्या है? हम खुद इस बात के गवाह है के रोज़ों के दौरान अक्सर सरों पर टोपियाँ लगाये घूमते है मस्जिदें भी भरने लगती हैं - बाहर - बाहर से हम खुद को बदल लेते है लेकिन मक्कारी - चालबाज़ी - धोखा देना - झूठ बोलना और भी बहुत सारी कमियाँ हमारे अन्दर ही रहती हैं हम अन्दर से खुद को नहीं बदल पाते बस ये ही सबसे बड़ी कमी है और इसी वजह से हमें किसी इबादत नमाज़, रोज़ा, ज़कात या हज में मिठास और लुत्फ नहीं मिलता! याद रहे के जब तक हम किसी भी इबादत के जो अन्दर और बाहर से पाक होकर पूरा नहीं करेंगे तब तक वो इबादत कुबूल नहीं होगी खुद को ही धोखा देने के लिये कुछ भी करते रहो।

(2) हमने सीख लिया और समझ लिया के हकीकत के रहमानी रोज़े के मायने ये है के अल्लाह तआला की याद में इतने गहरे डूब गये के हमें और कुछ याद ही नहीं आया और जब इतने दिल से इतनी मोहब्बत से, इन्सान अन्दर से अल्लाह की याद में डूब जाता है - तब उसे दीदार होते हैं उसके जो हकीकत में है। इसीलिये हकीकत के रहमानी रोज़दार के लिये ही अल्लाह तआला ने फरमाया ''रोज़े का बदला मैं खुद हूँ'' लेकिन कुछ नासमझ ज़ाहिरी इल्म के माहिर लोगों ने इसे बदल कर कर दिया

के "रोज़े का बदला मैं खुद देता हूँ "।

(3) हमने ये भी सीख लिया के हकीकत के रहमानी रोज़े में ना दुनिया का कोई लालच होना चाहिये ना ही जन्नत का लालच या दोज़ख का डर होना चाहिये एक सवाल ये भी है के जन्नत के लालच या दोज़ख के डर, इन दोनों को ही छोड़कर क्या कोई इबादत नहीं की जा सकती? ये बात हमारे समाज में कहाँ से आयी के हम लालच या डर की ही वजह से इबादत करते है – अल्लाह तआला और उसके रसुल स.अ.व. की मोहब्बत में इबादत नहीं करते बस भाई समझदारी तो ये है के डर और लालच छोड़कर अल्लाह तआला की मोहब्बत में ही इबादत की जाये और वो ही इबादत कुबूल होनो के काबिल है।

(4) हमने समझ लिया के रस्मी रोज़ा रखने वाले और ज़कात देन वाले अल्लाह के वलियों की नज़र में नासमझ और दूध पीने वाले बच्चे की तरह होते हैं उनका होना या ना होना बराबर हैं यानि उनकी इबादत भी बेकार है।

दरगाह सरकार कुतबुद्दीन बख्त्यार काकी कु.सि.अ.

हज की हक़ीक़त

ऐ उमर! यकीन जानो के असली खाना-ए-काबा इन्सान का दिल है (यहाँ दिल से मक़सद कल्ब से है उस दिल से नहीं जो हमारे सीने में बांयी तरफ धड़कता है-मुतर्जिम) इसीलिये फरमाया गया है ''इन्सान का कल्ब, रहमान का घर है ''बल्कि सरकारे दो आलम ने फरमाया ''मोमिन का दिल अल्लाह का अर्श है'' बस इसीलिये हकीकत के काबे यानि कल्ब का हज करना चाहिये और कल्ब (हकीकत का दिल) ही असली अल्लाह का घर है।

हजरत उमर ने अर्ज किया - या रसूलल्लाह! असली काबे यानि कल्ब - हकीकत के दिल का किस तरह हज करना चाहिये? सरकारे दा आलम ने फरमाया के इन्सान का वुजूद (जिस्म) मिसाल के तौर पर एक चार दीवारी है अगर इस चार दीवारी में से ''अल्लाह के सिवा भी और कोई मौजूद है'' इस - शक - वहम - गलत ख्याल - सुनी हुई बात पर यकीन करना - इन परदों को हटा दिया जाये तो हकीकत के दिल के आँगन में अल्लाह नज़र आ जायेगा - असली काबे के हज का यही मक़सद है।

इसके अलावा हकीकत के हज करने का मकसद ये भी है के इन्सान अपने होने को, अपनी हस्ती को इस तरह मिटा दे के उसके खुद के मौजूद होने का अहसास थोड़ा सा भी बाकी ना रह और वो बाहर और अन्दर से एक जैसा और पाक हो जाये और उसका दिल, अल्लाह तआला की सिफात (असर-गुण) के असर

से पूरा ही बदल जाये।

हज़रत उमर ने अर्ज किया के हुजूर अपनी हस्ती को फना (अपना होना खत्म हो जाना-मिट जाना) कैसे मिल सकती है?

सरकारे दो आलम ने फरमाया हकीकत के महबूब अल्लाह तआला पर आशिक होने से, जो इन्सान अल्लाह का आशिक हो गया वो अल्लाह तआला में ही मिल गया और जो अल्लाह तआला में मिल गया वो अल्लाह तआला का मज़्हर (ज़ाहिर करने वाला - दिखाने वाला हो गया।)

फिर हज़रत उमर ने सवाल किया के हज़रत! हकीकत के दिल कल्ब को अल्लाह का घर और अल्लाह का अर्श क्यों फरमाया गया है?

सरकारे दो आलम ने जवाब दिया के अल्लाह तआला फरमाता है "तुम्हारे नफ्सों में भी मेरी निशानियाँ हैं फिर तुम मुझे क्यों नहीं देखते" ऐ उमर रहने की जगह को घर कहते हैं क्योंकि खुदा तआला दिल में रहता है इसलिये अल्लाह तआला के रहने की जगह को अल्लाह का अर्श करार दिया!

फिर हज़रत उमर ने सवाल किया के या रसूलल्लाह! इस ख़ाक के पुतले मे (यानि जिस्म में) बोलने वाला, सुनने वाला देखने वाला कौन है ? और कैसा है ?

पैगम्बरे खुदा ने फरमाया के बस वो ही खुदा बोलने वाला है वो ही सुनने वाला है वो ही देखने वाला है।

हज़रत उमर ने पूछा के हज़रत! दिल जो हकीकत का काबा है उसका हज कौन करता है?

सरकारे दो आलम ने फरमाया के खुद, खुदा की ज़ात (मूल-असलियत-ज़ौहर) ....यानि जब नफ्स की बन्दगी (नफ्से अम्मारा के काबू में रहना) दूर हो जाता है और अल्लाह की पहचान करने की कोशिश करने वाले और अल्लाह तआला में कोई परदा बाकी नहीं रहता तो वो अल्लाह तआला के असर में आ जाता है और उसके अन्दर अल्लाह की ज़ात समा जाती है अल्लाह तआला का इन्सान के दिल में समा जाना ही हकीकत में काबा यानि दिल का हकीकत का हज है।

हजरत उमर ने फिर सवाल किया के हुज़ूर जब सब कुछ इसी पाक ज़ात का ज़ाहिर होना है तो फिर ये राह दिखाना - राह दिखाने वाला किस के लिये और क्यों है?

सरकारे दो आलम फरमाया के वो खुद ही राह दिखाने वाला है और खुद को ही राह दिखाता है।

हज़रत उमर ने अर्ज़ किया, हुज़ूर ये दुनिया का इतना रंग - बिरंगा होना, ये इतने नज़ारे क्यों है?

सरकारे दो आलम ने फरमाया के रास्ता दिखाने की मिसाल सौदागर जैसी है के जिस चीज़ का जो ख़रीदार हो सौदागर उसको वो ही चीज़ देता है गेहूँ के खरीदार को जौ नहीं दिये जाते और जौ के खरीदने वाले को गेहूँ नहीं दिये जाते हैं।

ऐ उमर! पैगम्बरों की मिसाल ऐसी है, जैसे बीमारी का इलाज करने वाला हकीम-यानि जिस तरह हकीम या डाक्टर मरीज़ की तबियत और उसकी बीमारी के मुताबिक देता है और सही दवा पाकर मरीज़ सही हो जाता है। इसी तरह पैगम्बर और उनके रूहानी वारिस, उन लोगों को जो अन्दर से ईमानदार होते हैं

और रूहानी इल्म की तलब और तड़प रखते हैं उनको उनकी अन्दरूनी काबलियत के हिसाब से अल्लाह तआला को जान लेने, पहचान लेने की दवा यानि तरीके बताते हैं जिस की वजह से इन्सान अल्लाह तआला को ना जानने, ना पहचानने की बीमारी से निकलकर, रूहानी तौर पर सेहतयाब हो जाता है यानि अल्लाह तआला को जान जाता है पहचान जाता है।

ऐ उमर! इन्सान अलग-अलग किस्मों में बँटे हुये हैं और इन्सानों की अलग-अलग किस्मों में ज़मीन वा आसमान का सा फर्क है जाहिर में सब एक जैसे है लेकिन फर्क अंदरूनी काबलियत और समझ का है।

पहला गिरोह या किस्म आम मुसलमानों की है ये लोग बहुत सारे रब (अरबाब) ज़ाहिर वाले कहलाते हैं ये लोग (शरियत) (क़ानून) की राह पर चलने वाले होते हैं (यहाँ ये समझना ज़रूरी है के कौन सी शरीयत या क़ानून? वो जो सरकारे दो आलम ने फरमाई या वो जो करबला की जंग के बाद यज़ीद या मरवान या उसके वारिसों ने हुकूमत और बादशाही की ताकत बढ़ाने के लिये बनाई या वो जो रस्में या रिवाज जिनको शरीयत का नाम दे दिया गया। हमें सबसे पहले ये जानना ज़रूरी है के कौन लोग हमको कौन सी शरीयत पर अमल करने को कह रहे हैं और ये किसकी बनाई हुई है और क्या बिल्कुल ठीक-ठीक और सही-सही हम तक पहुँची है - मुतर्जिम)

ये लोग अल्लाह की पहली सीढ़ी तक ही रहते हैं ये ऐसे हैं के अल्लाह तआला को जान लेने पहचान लेने का आगे का सफर नहीं करते यहाँ तक की उनकी उमर तक खत्म हो जाती है और ये

दीन और दुनिया से खाली हाथ और सिर्फ ज़ाहिर को मानने वाले होकर मर जाते हैं ये गिरोह शरीयत वाला गिरोह कहलाता है।

ना खुदा ही मिला ना विसाले सनम
ना इधर के रहे ना उधर के रहे

दूसरे किस्म का गिरोह ख़ास लोगों का है इन लोगों में दोनों पहलू पाये जाते हैं आम लोगों का भी ख़ास लोगों का भी। ये गिरोह अन्दर के रूहानी इल्म की तरफ ध्यान – और तवज्जोह तो देता है लेकिन अन्दर के छुपे हुये इशारों को नहीं समझ पाते हैं इसलिये कभी दुनिया को चाहने लगते हैं और कभी दीन को चाहने लगते हैं इसलिये इनकी आँखों को अन्दर के नूर का पूरा-पूरा पता नहीं चलता इस गिरोह को तरीकत वाला गिरोह कहा जाता है।

तीसरी किस्म या गिरोह ख़ासुल-ख़ास का है इन्हीं को अल्लाह को जान लेने वाला – पहचान लेने वाला कहा जाता है।

ऐ उमर! हिदायत देना, समझाना, राह दिखाना, सीखने वाले की अन्दरूनी काबलियत और अन्दरूनी हकीकी, हकीकत के हिसाब से हुआ करती है ये अल्लाह के राज़ों की बड़ी और महान नेमत (इनाम) आम लोगों को नहीं दी जाती है क्योंकि जो इसके हकदार नहीं है ऐसे लोगों को इतना बड़ा इनाम दे देना –इस इनाम की कदर ना करना माना जायेगा क्योंकि वो इसके हकदार नहीं हैं और हकीकत की अन्दर की काबलियत नहीं रखते इसलिये उनके राह से भटक जाने का ख़तरा है। फिर हज़रत उमर ने सवाल किया के ''ज़ाते रहमान'' क्या है? और बाकी चीज़ें क्या हैं?

हुज़ूर सरकारे दो आलम ने जवाब दिया के तमाम चीज़ें अल्लाह तआला को ज़ाहिर करने वाली हैं हकीकत में तो सब एक ही हैं ज़ाहिर हो जाने का तरीका और ख़ासियत अलग-अलग है जैसा के मतलब तो एक ही होता है लेकिन उसे अलग-अलग अलफाज़ों और तरीकों से समझाया जाता है इसी तरह ज़ात एक ही है लेकिन ये ही ज़ात अलग-अलग तरीकों से ज़ाहिर हो रही है।

अल्लाह तआला ने फरमाया ''अल्लाह तआला का हर चीज़ पर अहाता है'' और इन्सान को बाकी सब चीज़ों से बेहतरीन करार दिया गया है ''अल्लाह तआला ने इन्सान को अपनी सूरत पर पैदा किया ''।

हजरत उमर ने फिर पूछा! हुज़ूर जब इन्सान बनने वाली चीज़ों में सबसे बेहतरीन है तो फिर इस में ख़ास और आम - काफिर या मुसलमान होने की क्या वजह है?

सरकारे दो आलम ने फरमाया के अल्लाह तआला ने फरमाया ''हमने कुछ को कुछ पर बेहतरीन बनाया ''।

बाद में फरमाया के अल्लाह के कलाम में है ''हर नफ्स को मौत का मज़ा चखना है'' मौत को हकीकत में इस हदीस के मुताबिक समझना चाहिये के ''मौत एक पुल है जिसको पार करके हबीब, हबीब से मिल जाता है''।

ऐ उमर! इस्लाम की हकीकत के मुताबिक मोमिन होने का जो तरीका और दर्जा है वो खोलकर ब्यान कर दिया है फिलहाल तुम्हारे लिये काफी है अगर तुम इस से आगे और इल्म की गहराईयाँ और ऊँचाईयाँ जानना चाहते हो तो सारी खासियतें और

राज़ तुम्हारे अन्दर मौजूद हैं क्योंकि जिसने अपने नफ्स को पहचान लिया उसने अपने रब को पहचान लिया।

ऐ मेरे हमराज़! कुतबुद्दीन! ये खास छुपे हुए नुक्ते (इशारे) और खुफिया इशारे ये जो सरकारे दो आलम ने अपने खलीफा हज़रत उमर को समझाये थे तुम को लिख दिये हैं हमें उम्मीद है के तुम इन नुक़ात (इशारे - राज़ की बातें) पर भरोसा करोगे यकीन करोगे और कुबूल करोगे! हमें तंग-छोटी समझ वाले ज़ाहिरी इल्म के माहिरों से कुछ लेना-देना (मतलब-सरोकार) नहीं इन का इलाज तो अल्लाह तआला ही कर सकता है क्योंकि सब कुछ अल्लाह तआला के ही कब्जे में है "अल्लाह तआला के हुक्म के बिना कोई भी चीज़ हिल नहीं सकती" यही हर मुसलमान का भरोसा है और इसी पर यकीन है।

सूफी गयासुद्दीन की गुज़ारिश : मेरे दिली दोस्तों, रूहानी भाइयों, सरकारे दो आलम की जो अन्दर के इल्म की छुपी हुई, खुफिया तालीम है और जो सरकार ग़रीब नवाज़ के जरिये ज़ाहिर हुई उससे साफ-साफ पता चल जाता है के हकीकत में, इन्सान का हकीकत का दिल ही असली काबा है और बस इसी का हज करना चाहिये और वो हकीकत का हज ये है इन्सान के जिस्म को एक चहार दीवारी समझ कर, इसके अन्दर अल्लाह के सिवा भी और कोई मौजूद है इस ख्याल, वहम और गुमान को ही मिटा देना और खत्म कर देना असली हज है और ये ही हज का मकसद भी है इसके अलावा हकीकत के हज का एक और मकसद ये भी है के इन्सान अन्दर और बाहर से एक जैसा हो जाये और अपने को अन्दर से मिटा दे, खत्म कर दे जिससे वो अल्लाह तआला का

असर अपने अन्दर ले सके और वो असर लेकर अल्लाह को ज़ाहिर करने वाला बन जाये।

जबकि अल्लाह तआला ने फरमा दिया के ''तुम्हारे नफ्सों में भी मेरी निशानियाँ है तुम क्यों नहीं देखते'' तो इसका मतलब हुआ के अल्लाह का घर हमारे अन्दर ही है और जब घर अन्दर है तो .... और इसीलिये फरमा गया है ''मोमिन का दिल अल्लाह तआला का अर्श है ''

मेरे दिली दोस्तों, इसके बाद की तालीम से ये बात ज़ाहिर और साबित हो गई के इस जिस्म में बोलने, देखने, सुनने वाला वो ही है! बस कामिल मुर्शिद की ज़रूरत है जो ये दिखा दे – साबित कर दे – बस–

अल्लाह के पैगम्बर और अल्लाह के वलियों का काम इन्सान के अन्दर की बिमारियों को दूर करना होता है और वो अलग – अलग इंसानों की अन्दर की हिम्मत और काबलियत देखकर ही इलाज करते हैं।

इसके बाद की तालीम बहुत ही ज़्यादा कीमती है इसको समझ लेने से हमारी दुनिया और आखरत दोनों बदल सकते हैं! और हमें ये भी पता चल सकता है के हम कहाँ हैं और किस गिरोह से हैं तालीम के मुताबिक इन्सानों की तीन किस्में हैं एक बेहतरीन, दूसरी बस ठीक और तीसरी बिल्कुल बेकार है अब हमें बेहतरीन किस्म वालों में होना है जिससे अल्लाह तआला की रहमत–बरकत–सलामती हम तक आ सकें! आमीन

दुआः या अल्लाह हमें हज की हकीकत समझने की तौफीक अता फरमा, हकीकत का हज कर लेने, और हो जाने की

तौफीक अता फरमा! आमीन

हमने सीखा: (1) हमने समझ लिया और सीख लिया और दलीलों से भी साबित हो गया के इन्सान का हकीकत का दिल ही असली खाना-ए-काबा है और इसी का हज करना असली हज है!

(2) हमने ये भी जान लिया, समझ लिया और सीख लिया के हकीकत का हज तो ये है के इन्सान के अन्दर से तमाम अन्दर की बिमारियाँ और बुराईयाँ दूर हो जायें और इन्सान अन्दर से पाक हो जाये और अन्दर से पूरा-पूरा पाक हो जाने के बाद अल्लाह तआला का असर अपने अन्दर लेना बेहतर है! हमें ये याद रखना चाहिये के हज के एक मायने "बदल जाना" भी होते हैं यानि जो बदल गया - जिसकी ज़िंदगी ही बदल गई वो ही हकीकत का हज करने वाला है।

(3) हमने अब तो सरकारे दो आलम की तालीम से ये भी समझा, सीखा और जान लिया के अल्लाह तआला बाहर कहीं आसमानों पर नहीं है बल्कि हमारे जिस्म के अन्दर ही जो देखता, सुनता और बोलता है वो ही अल्लाह है और जो लोग ये समझते हैं के अल्लाह तआला बाहर उपर कहीं आसमानों पर है और मरने के बाद ही अल्लाह तआला का दीदार हो सकता है वो बहुत ही बड़ी गलत फहमी में है क्योंकि अल्लाह तआला ने फरमाया है " जो यहाँ अंधा वो वहाँ भी अंधा और बहुत दूर है सीधी राह से" (57:3)

(4) हमने पहले की तालीम से और अब की तालीम से ये भी सीख लिया, समझ लिया और जान लिया के कलमे के हकीकत के मायने हैं के अल्लाह के सिवा और कोई मौजूद नहीं है और

हजरत मोहम्मद मुस्तफा स.अ.व. अल्लाह को ज़ाहिर करने वाले रसूल हैं – बस इस दुनिया की हर चीज़ उसको ही ज़ाहिर कर रही है हमें ज़रूरी है के अल्लाह के सिवा भी कोई और मौजूद और ज़ाहिर है इस ख्याल को भी दिल से निकाल दें वरना हम बे–होश माने जायेंगे।

(5) सबसे ज़्यादा ज़रूरी और क़ीमती बात हमने ये समझी के इन्सान अलग–अलग किस्म के होते हैं जिसके अन्दर जितनी अन्दर की हिम्मत और काबलियत होती है वो उतना ही कर पाता है समझ पाता है पहली किस्म के इन्सान तो वो होते हैं जिन्हें हकीकत के इस्लाम की कोई खबर ही नहीं होती वो बस रस्मों–रिवाजों को पूरा करते हैं और जो उन्होंने सही या गलत सुना – सुना–समझा उसकी गहराई मे ना जाकर बस रस्मी इस्लाम को पुरा करने की खुशफहमी में रहकर यकीन को ही ईमान समझते हैं ऐसे ही इन्सान ज़्यादा हैं और ये नासमझ होते हुए सबसे ज़्यादा समझदार खुद को ही समझते हैं! तकब्बुर को चोट लगी?

दूसरी किस्म में वो इन्सान है जो कि हकीकत को जानने की तलब और तड़प रखते हैं और उसके लिये कोशिश भी करते हैं लेकिन ज़ाहिरी इल्म के माहिरों और अन्दर का इल्म ना जानने वालों की सोहबत, रस्मों–रिवाजों को देखकर उनमें रहते हैं उनका ध्यान कभी दुनिया अच्छी करने में लगा रहता है और कभी आखरत का ख्याल रहता है इन्हें अन्दर से आने वाले इशारों की पहचान नहीं हो पाती इस वजह से इनकी अन्दर की आँख को नूर हासिल नहीं हो पाता और ये अल्लाह तआला को जान लेने,

पहचान लेने से महरूम ही रह जाते हैं खुशकिस्मती से अगर कोई कामिल पीर रहबर या मुर्शिद इन्हें मिल जाये तो ही इनकी ज़िन्दगी का मक़सद पूरा हो सकता है।

तीसरी क़िस्म में जो इन्सान हैं ये सबसे ज़्यादा क़ीमती हैं ये वो हैं जिन्हें हकीकत के इस्लाम के मक़सद और मतलब को जानने की लगन लगी और इन्होंने रस्मों-रिवाजों को छोड़ा, सरकारे दो आलम का (इल्मे-बातिन) अन्दर का इल्म सीखा - समझा और उस पर अमल किया और ज़िन्दगी का जो असली मक़सद है यानि अल्लाह तआला का ये इस दुनिया में ही दीदार किया उसको पहचाना और जान लिया ये ही लोग अल्लाह के वली यानि वारिस और सरकारे दो आलम के वारिस कहलाये इन्होंने ही ज़िन्दगी का असली मक़सद को समझा और हज़ारों लोगों को अल्लाह तआला की पहचान के तरीके बताये, समझायें और उनको अमल कराया - प्यार - मोहब्बत और इन्सानियत का पैग़ाम दुनिया को दिया यही अल्लाह के वली, खास में से भी ख़ास कहलाये और अब भी इनके रूहानी वारिस दुनिया में हकीकत का इस्लाम - अन्दर का इल्म और मोहब्बत और इन्सानियत का पैग़ाम दुनिया में फैला रहे हैं! शुक्रिया

ख़ादिमुल फुकरा-बन्दाये मिस्कीन
सय्यद ग़यासुद्दीन शाह
मरकज़े तसव्वुफ-खानकाह शरीफ
दरगाह ख्वाजा कुतबुद्दीन बा-इख्तयार काकी कु.सि.अ.
मकान नं. 1011-ई-1-वार्ड नं. 7, महरौली
नई दिल्ली-110030 फोन : 07838116286

पहला राज़

बिस्मिल्लाह - हिर - रहमानिर - रहीम

मेरे दिली मुहिब, मेरे कल्बी (हकीकत के दिल) के दोस्त, मेरे भाई ख़्वाजा कुतबुद्दीन देहलवी, अल्लाह तआला आपको दोनों जहानों की नेकी और मुबारकबाद अता फरमाये!

इस कमज़ोर बन्दे मोईनुद्दीन की तरफ से सलाम के बाद साफ, बिल्कुल साफ़ हो जाना चाहिये के अल्लाह तआला के जो राज़ हैं उसके कुछ नुक्ते और इशारे लिखता हूँ ये अपने सच्चे मुरीदों और अल्लाह तआला की सच्ची तड़प - तलब और चाहत रखते हों उन्हें समझा देना के वो गलती में ना पड़े!

मेरे अज़ीज़ (प्यारा) जिसने अल्लाह को पहचान लिया है वो कभी सवाल - आरजू या ख्वाहिश नहीं करता और जिसने अभी तक नहीं पहचाना वो इनकी बात को नहीं समझ सकता दूसरा ये के हिरस (हवस - लालच) (आरजू) को छोड़ दो जिसने अपने लालच - आरजू और हवस को छोड़ दिया उसने अपनी ज़िन्दगी का मक़सद और मतलब समझ लिया!

इसलिये ऐसे इन्सान के बारे में अल्लाह तआला ने फरमाया ''वो जिसने अपने नफ्स को ख्वाहिश से रोका, उसका ठिकाना जन्नत है''

जिस दिल को अल्लाह तआला ने अपनी तरफ से फेर दिया है उसे बहुत सारी हवस - आरज़ू - चाहत के कफन में लपेट कर ज़मीन में दफन कर दिया है।

एक दिन, (जिनको अल्लाह तआला की पहचान हो गयी) उनके बादशाह हज़रत ख्वाजा बा यज़ीद कु.सि.अ. ने फरमाया के मैंने एक रात अल्लाह तआला को ख्वाब में देखा मुझसे पूछा गया - बा यज़ीद क्या चाहते हो? मैंने कहा जो तू चाहता है! जवाब मिला के अच्छा जिस तरह तू मेरा है उसी तरह मैं तेरा हूँ!

बस अगर तसव्वुफ की गहराई में जाना चाहते हो और माहिर होना चाहते हो तो अपने लिये फालतू के आराम और ज़रूरत से ज़्यादा एशो-आराम की चीज़ों का दरवाज़ा बन्द कर लो और मोहब्बत में घुटनों के बल बैठ जाओ (यानि इश्क-मोहब्बत और आजज़ी अपना लो) अगर तुमने ये काम कर लिया तो समझ लो के तसव्वुफ की हकीकत जानने वाले हो गये अल्लाह तआला से मोहब्बत करने वाले को ये बात दिल और जान पूरी करनी चाहिये ऐसा करने से वो शैतान की बुराईयों से आज़ाद हो जायेगा और दोनों जहानों के मक़सद और मुराद को हासिल कर लेगा!

एक दिन मेरे शैख़ साहब (सरकार उस्मान हारूनी) ने फरमाया - मोईनुद्दीन क्या तुझे मालूम है साहबे हुज़ूर (जो हर वक्त अल्लाह की याद में हाज़िर रहे) किसे कहते हैं? देखो साहबे हुज़ूर वो होता है के हर वक्त अल्लाह की याद में डूबा रहे और जो कुछ भी हो उसे अल्लाह की तरफ से हुआ, ये

माने! और सब इबादतों का मक़सद भी यही है जिसे ये मिल गया वो दोनों जहानों का मालिक हो गया यहाँ का भी और वहाँ का भी और इस दुनिया का बादशाह तो उसका मोहताज हो जाता है!

एक दिन मेरे पीरो - मुर्शिद ख़्वाजा उस्मान हारूनी ने मुझे कहा है कुछ दरवेश जो ये कहते हैं के जब अल्लाह को चाहने वाला उसकी तलब रखने वाले का मक़सद पूरा हो जाता है तो उसे घबराहट रहती है - ये ग़लत है, दूसरे ये जो कहते हैं के अल्लाह तआला को जानने - पहचानने की लगातार कोशिश ज़रूरी नहीं ये भी गलत है क्योंकि सरकारे दो आलम हमेशा अन्दर की इबादत में डूबे रहें और ये फरमाया ''हमने तेरी ऐसी इबादत नहीं की जैसा के हक़ था'' और बड़ी ही नरम दिली से फरमाया ''शाहिद होता हूँ के अल्लाह के सिवा और कोई इबादत के लायक़ नहीं और इस का भी शाहिद होता हूँ के हज़रत मोहम्मद स.अ.व. - अल्लाह के बन्दे और भेजे हुऐ पैग़ाम लाने वाले रसूल हैं''

बस यक़ीन जानो के जब (जान लेने वाला) अपने मक़सद और मंज़िल पर पहुँच जाता है तो उस वक्त वो उस मक़ाम के मुताबिक़ रियाज़त (ध्यान - मेडिटेशन) करता है और बड़ी ही सच्चाई से - पूरे दिल से करता है इससे हमेशा अल्लाह तआला की याद में रहना और इल्म की नई - नई

चीज़ें समझ में आना बढ़ जाता है और सबसे ख़ास से भी ख़ास मेराज यही नमाज़ है जब कोई शख़्स हकीकत जानने के बाद सच्चाई के काम लेता है तो उसे ऐसी प्यास महसूस होती है जैसे उसने आग के कई प्याले पी रखे हों जैसे - जैसे वो ऐसे प्याले पीता जायेगा प्यास और बढ़ती जायेगी वो इसलिये के अल्लाह तआला के जमाल (ख़ूब सूरती) की कोई हद नहीं है! इस वक्त इसका सुकून और चैन - आराम - बदल कर बे सुकूनी - बै-चेनी - बे-आराम हो जाती हैं और ये तब तक रहती हैं जब तक अल्लाह का दीदार ना हो जाये! वा-अस्सलाम

दुआ: या अल्लाह, हमने जिन रस्मों को इस्लाम समझ लिया उससे बचने की तौफीक़ और हिम्मत अता फरमा और हमें हकीकत का सच्चा मुसलमान और मोमिन होने के लिये कोशिश करने वाला और अन्दर का इल्म सीखने वाला बनने की तौफीक़ और हिम्मत अता फरमा! .... आमीन

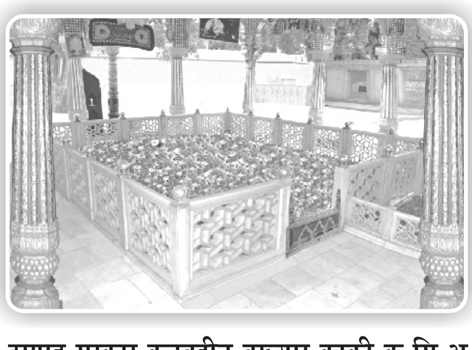

दरगाह सरकार कुतबुद्दीन बख़्यार काकी कु.सि.अ.

दूसरा राज़

बिस्मिल्लाह-हिर-रहमानिर-रहीम

तलब और तड़प का दर्द रखने वाले, अल्लाह तआला के दीदार और उसमें मिल जाने की आरज़ू रखने वाले सख्तियाँ और ज़ुल्म सहने वाले – दरवेश, मेरे भाई ख़्वाजा कुतबुद्दीन देहलवी, अल्लाह तआला आपको दोनों जहानों की नेकी अता फरमाये! आमीन

सलाम के बाद – ख़ास मक़सद ये है के एक दिन हज़रत उस्मान हारूनी कु.सि.अ. की ख़िदमत में ख़्वाजा नजमुद्दीन सुग़रा ख़्वाजा मोहम्मद तारीक और ये गुलाम हाज़िर थे इतने में एक शख़्स ख़िदमत में हाजिर हुआ और पूछा ये कैसे पता चल सकता है के किसी इन्सान को अल्लाह तआला की नज़दीकी मिल गई है या वो अल्लाह तआला के करीब हो गया है? ख़्वाजा साहब ने फरमाया के नेक आमाल और अच्छे काम करने की तौफीक़ बहुत ही बड़ी बात है यक़ीन जानो के जिस इन्सान को अच्छे काम करने की तौफीक़ – हिम्मत और इरादा दिया गया उसके लिये अल्लाह के करीब होने का दरवाजा खुल गया!

फिर आँखों में आँसू आ गये और फरमाया के एक इन्सान के यहाँ एक लौंडी (दासी) थी जो रात के वक्त उठ

कर इबादत (अल्लाह को जानने पहचानने की कोशिश) करती और शुक्र अदा करती मै तेरे से नज़दीक और करीब हो चुकी हूँ मुझे अब अपने से दूर ना करना! इस लौडी (दासी) के मालिक ने एक दिन ये सब कुछ देख लिया और उससे पूछा? तुम्हे ये कैसे मालूम है के तुम अल्लाह तआला के नज़दीक और करीब हो चुकी हो? लौडी (दासी) ने जवाब दिया के अल्लाह तआला ने आधी रात को उठा कर मुझे हकीकत की इबादत करने की तौफीक़ दे रखी है इसी तरीके से मै जानती हूँ के मुझे "अल्लाह का करीब होना" हासिल है और मालिक ने लौडी से कहा जाओ मैंने तुम्हें अल्लाह के वास्ते आज़ाद किया!

बस इन्सान को दिन-रात-हमेशा अल्लाह तआला को जानने - पहचानने की कोशिश में लगा रहना चाहिये जिससे अच्छे और नेक लोगों में शामिल हो जाये और (बुराई की तरफ ले जाने वाले नफ्स) और शैतान की क़ैद से बच जाये - आमीन - वस्सलाम

दुआः या अल्लाह हमें ये तौफीक और हिम्मत अता फरमा के हम सब इबादतों के अन्दर की शर्ते और बाहर की शर्ते पूरी कर सकें जिससे हमारी इबादत कुबूल होने के काबिल हो जाये और हमको अन्दर से पाक हो कर हकीकत की इबादत करने की तौफीक अता फरमा! .... आमीन

तीसरा राज़

बिस्मिल्लाह - हिर - रहमानिर - रहीम

अल्लाह हू समद (अल्लाह को किसी चीज़ की कोई ज़रूरत नहीं) क्या राज़ है? इस राज़ के जानने वाले, (ना उसने किसी को जना-ना किसी ने उसको जना) की रोशनी के माहिर, मेरे भाई ख़्वाजा कुतबुद्दीन कु.सि.अ. देहलवी-अल्लाह तआला आप के दर्जे और ज़्यादा ऊँचे करें!

फकीर परतफसीर (लफ्ज़ों के सही मायने पैदा करने वाला) मोईनुद्दीन संजरी की तरफ से ख़ुशी-लगाव और मोहब्बत भरा सलाम हो मकसद ये है दम रहते हुए, लिखता रहूँ इसके लिये जो दिखने वाली सेहत है उसकी वजह से शुक्रिया अता करता हूँ

अल्लाह तआला आपको दोनों जहान की सेहत अता फरमाये

भाई जान! मेरे शेख (पीरो-मुर्शिद ख़्वाजा उस्मान हारूनी फरमाते है अल्लाह को जान लेने-पहचान लेने वालों के अलावा और किसी को हकीकत के इश्क के जो इशारे होते है वो नहीं बताने चाहिये! ख़्वाजा शेख सादी ने जनाब से पूछा के जिनको अल्लाह की पहचान हासिल हो गई है उनकी पहचान क्या है? तो ख़्वाजा साहब ने फरमाया के जिनको अल्लाह की पहचान हो गयी है उनकी पहचान का तरीका

(तर्क) यानि (छोड़ देना) है यानि वो चीज़ों को छोड़ देते है बाँट देते है यकीन जानो के वो अल्लाह तआला को पहचान लेने वाले है जिसमें ''छोड़ देने-बाँट देने'' की आदत नहीं उसमें अल्लाह को पहचान लेने की बू तक भी नहीं ये अच्छी तरह यकीन कर लो के कलमा-ए-शहादत में किस को ''नहीं'' कहा गया और किस को साबित किया गया इसको समझ लेने और जान लेने का नाम अल्लाह की पहचान है माल-पैसा रूतबा बड़े भारी बुत है और इन बुतों ने बहुत से लोगों को सीधी राह से गुमराह किया है और गुमराह कर रहे है आम दुनिया के लोग इनकी ही इबादत कर रहे हैं और बहुत सारे लोग बड़े मरतबे और माल-रूपया-पैसों की पूजा कर रहे हैं!

बस जिस ने माल और मरतबे को दिल से निकाल दिया उसने पूरी नफी कर दी और जिसे अल्लाह तआला की पहचान हासिल हो गयी उसने पूरा-पूरा साबित कर लिया और ये बात ला-इलाह-इल्लल्लाह के कहने और इस पर अमल करने से हासिल होती है बस जिस ने कलमा-ए-शहादत नहीं पढ़ा,-नहीं समझा-नहीं देखा उसे अल्लाह तआला की पहचान नहीं होती! वा-अस्सलाम

दुआः ऐ हमारे रब, तौफीक अता फरमा के हम अन्दर के इल्म के राज़ो को हकदार के अलावा छुपा कर रख सकें, और हमें कलमा-ए-शहादत को उसके हक के साथ पढ़ने-समझने और कलमे के वुजूद को देख सकने की हिम्मत और तौफीक अता फरमा! आमीन!

चौथा राज़

बिस्मिल्लाह-हिर-रहमानिर-रहीम

हकीकत और पहचान को जान जाने वाले, पहचान कर लेने वालों के रब के आशिक, मेरे भाई-ख़्वाजा कुतबुद्दीन देहलवी

ये बात बिल्कुल साफ हो जानी चाहिये के इन्सानों में सबसे समझदार वो फकीर हैं (याद रहे फकीर और भिख़ारी अलग-अलग होते हैं) जिन्होंने दरवेशी और ''मकसद को छोड़ देना'' कुबूल कर लिया है क्योंकि ''मकसद हासिल करने'' में हार है और ''मकसद को छोड़ देना ही हकीकत में मकसद को पा लेना है'' लेकिन ग़फलत और बे-होश रहने वालों ने तो सेहत को तकलीफ और तकलीफ को सेहत समझ रखा है! बस हकीकत का समझदार वो ही है के जब उसे कोई दुनिया का लालच आये उसे फौरन छोड़ दे और फक्र को थाम ले, बे-मकसद हो जाये और मकसद पूरा होने को छोड़कर, मकसद पूरा ना होने को पकड़ ले! उसके साथ हो जाये!

बस मर्द को हक तआला से ही ताल्लुक रखना ज़रूरी है - जो हमेशा था हमेशा रहेगा अगर अल्लाह तआला

हकीकत की आँख दे – तो हर जगह उस के चेहरे के सिवा कुछ ना देखे और दोनों जहान में जिस की तरफ निगाह करे इस में इसी की हकीकत देखे! बांटना और हकीकत की आँख हासिल कर – क्योंकि अगर गौर से देखो तो ख़ाक का हर एक जर्रा उसकी ही तरफ इशारा कर रहा है बस ज़ाहिरी मुलाकात के शौक के अलावा क्या लिखूँ! वा – अस्सलाम

दुआ: या अल्लाह हमें फक्र और हकीकत की आँख अता फरमा जिससे हम हर जगह तेरा दीदार कर सकें! आमीन!

ख़ादिमुल फुकरा–बन्दाये मिस्कीन
सय्यद ग़यासुद्दीन शाह
मरकज़े तसव्वुफ-खानकाह शरीफ
दरगाह ख्वाजा कुतबुद्दीन बा–इख्तयार काकी कु.सि.अ.
मकान नं. 1011–ई–1–वार्ड नं. 7, महरौली
नई दिल्ली–110030 फोन : 07838116286

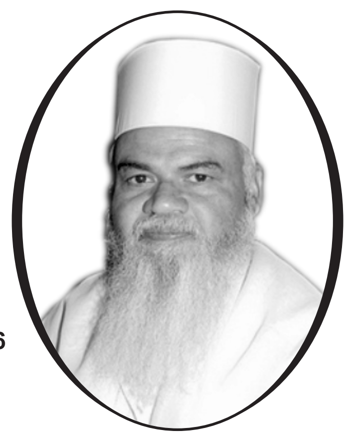

पाचवाँ राज़

बिस्मिल्लाह-हिर-रहमाँ-निर-रहीम

जो अल्लाह में मिल गये उनमें इज्ज़तदार – तमाम जहानों को पालने वाले के आशिक – भाई ख़्वाजा कुतबुद्दीन देहलवी (हकीकत मे जो पहचान लेने के काबिल हैं उसकी पनाह में होकर) – खुश रहें।

एक दिन ये दुआ करने वाला हज़रत ख़्वाजा उस्मान हारूनी कु.सि.अ. की ख़िदमत में हाज़िर था के एक शख़्स ने आकर अर्ज किया शेख़ साहब, मैंने बहुत किस्म के इल्म हासिल किये, बहुत कोशिश की, लेकिन मकसद और मंज़िल को नहीं पाया, ख़्वाजा साहब ने फरमाया के तुम्हें सिर्फ एक बात पर अमल करना चाहिये इल्म वाले भी हो जाओगे और कोशिश करने वाले भी वो ये के सरकारे दो आलम ने फरमाया ''दुनिया से दिल से अलग हो जाना सब इबादतों का राज़ है और दुनिया से दिल से मोहब्बत करना ही गलतियों की जड़ है''!

अगर तुम इस पर अमल कर लो तो तुम्हें किसी और इल्म की ज़रूरत ही ना रहे मगर इस का कह लेना आसान है मगर इस पर अमल करना मुश्किल है।

बस यक़ीन जानो के (छोड़ देना) (दिल में अल्लाह तआला की मोहब्बत के अलावा कुछ ना रहे) उस वक्त तक हासिल नहीं हो सकती जब तक मोहब्बत पूरी ना हो जाये और मोहब्बत उस वक्त पैदा होती है जब अल्लाह तआला हिदायत करे – हक तआला की हिदायत और इशारे के बिना मकसद

मंजिल हासिल नहीं हो सकती बस (जिसे अल्लाह तआला हिदायत दे वो ही हिदायत पा सकता है)

बस इन्सान को ज़रूरी है के अल्लाह तआला का लिहाज़ करके अपने क़ीमती और अच्छे वक्त को दुनिया की चाहत के लिये बरबाद ना करें बल्कि वक्त को कीमती समझ कर हकीकत के इस्लाम - अन्दर का इल्म - अन्दर से पाक ज़िन्दगी हासिल हो - तसव्वुफ का इल्म हासिल हो इसके लिये वक्त और ज़िन्दगी लगायें, प्यार और मोहब्बत से लोगों से मिलें, अपने गुनाहों को देखकर उन पर शर्मिन्दा हो कर आँख ना उठायें, हर हालत में नरम दिली और मोहब्बत से पेश आयें क्योंकि, इन्सानों से मोहब्बत और अल्लाह तआला को पहचानने की कोशिश और सबसे अच्छा काम यही लगाव और मोहब्बत है।

इसके बाद इस मौके के मुताबिक ये किस्सा बयान फरमाया के हातिम असम कु.सि.अ. ख़्वाजा शफीक बल्ख़ी के शागिर्द और मुरीद थे। एक दिन शेख़ साहब ने पूछा के कितना वक्त हो गया के तुम मुझ से मोहब्बत में हो और खिदमत करते और बातें सुनते आये हो? अर्ज किया - तीस साल से - फिर पूछा - इतने वक्त में क्या हासिल किया और क्या कुछ फायदा उठाया? अर्ज किया - आठ फायदे हासिल किये - पूछा क्या इससे पहले ये फायदे हासिल ना थे - अर्ज किया, शेख़ साहब, अगर आप सच पूछें तो इन से ज़्यादा की अब मुझे ज़रूरत भी नहीं (हम अल्लाह की तरफ से हैं और उसी की तरफ लौट जाना है)

हातम! मैंने सारी उमर तेरे काम में खर्च कर दी मैं नहीं चाहता के तू इससे ज़्यादा हासिल करे अर्ज किया - मेरे लिये

इतना ही इल्म काफी है क्योंकि दोनों जहानों से ही आज़ाद हो जाना इन फायदों में आ जाता है! फरमाया – अच्छा – इन्हें बयान करो? अर्ज किया – सरकार

पहला ये है के मैंने दुनिया को ग़ौर से देखा तो मालूम के हर इन्सान ने किसी ना किसी को अपना महबूब और माशूक बना रखा है वो महबूब और माशूक के कुछ, मोत तक इसके साथ रहते हैं – कुछ मर जाने तक, कुछ कबर के किनारे तक, इसके बाद कोई भी साथ नहीं जाता कोई ऐसा नहीं के इन्सान के साथ कबर में जा कर, उसका ग़म दूर करने वाला और रोशनी देने वाला चराग़ बने, कयामत का रास्ता तय कराये मुझे मालूम हो गया के अच्छे अमल और नेक काम ही वहाँ काम आयेंगे तो मैं नेक काम और अच्छे आमाल से ही मोहब्बत करने लगा और नेक काम और अच्छे अमल को ही अपने लिये मक़सद बना लिया के यही कबर में, मेरा ग़म दूर करेंगे! मेरे लिये कबर में रोशनी देने वाले चराग़ बने और रास्ते में, मेरे साथ रहें और मुझे छोड़ ना जायें!

ख़्वाजा शफीक कु.सि.अ. ने फरमाया – हातम तूने बहुत अच्छा किया–

दूसरा ये के जब मैंने लोगों को गौर से देखा तो मालूम हुआ के सब के हिरस (दूसरों की नकल करने – बराबरी करने) और हवस के पैर के नीचे दबे होने की वजह से और नफ्से अम्मारा (नफ्स) के कहने पर चलते हैं फिर मैंने इस आयत पर गौर किया ''जिसने अल्लाह से डर कर (बुराईयों की तरफ ले जाने वाला नफ्स) को ख्वाहिशों से रोका उसका ठिकाना जन्नत है'' तो यकीन हो गया के कुरान शरीफ हक है इसलिये मैंने नफ्से अम्मारा

के खिलाफ कमर कस ली और कोशिशों के जरिये बुराईयों की तरफ ले जाने वाले नफ्स की चाहत को पूरा ना किया - सिर्फ अल्लाह तआला का हुक्म मानने से ही मुझे लगातार आराम हासिल होता रहा!

ख़्वाजा शफीक बल्ख़ी ने फरमाया - अल्लाह तआला तुझे इस में बरकत दे - तूने खूब कहा और अच्छा किया -

तीसरा फायदा ये के जब मैंने लोगों के हालात को ग़ौर से देखा तो देखा के हर इन्सान दुनिया पाने के लिये कोशिश करता है ग़म और मुसीबत झेलता है बरदाश्त करता है तब कहीं दुनिया से कुछ हासिल होता है फिर इस पर बड़ा ख़ुश होता है! इसके बाद मैंने इस आयत पर गौर किया "जो कुछ तुम्हारे पास है खत्म होने वाला है और जो अल्लाह के यहाँ है वो बाकी रहने वाला है " तो जो कुछ मैंने जमा किया था सब अल्लाह की राह में खर्च कर दिया और अपने आप को अल्लाह के सुपुर्द कर दिया जिससे अल्लाह के दरबार में "रास्ते का खर्च " और निगहबान और राहबर बनें!

ख़्वाजा शफीक कु.सि.अ. ने फरमाया - अल्लाह तआला तुझे बरकत दे बहुत अच्छा किया है!

चौथा ये के जब मैंने दुनिया के हालात को गौर से देखा तो मालूम हुआ के कुछ लोगों ने इन्सान की इज्ज़त और अहतराम और उसका बड़ा होना इस बात में समझ रखा है के कितने लोग उसके साथ हैं और वो इस बात पर नाज़ और घमण्ड करते हैं कुछ लोगों ने समझ रखा है के रूपया-माल जायदाद और अच्छी औलाद होने पर ही इज्ज़त होती है और वो इन सब को ही इज्ज़त

की वजह समझते है इसके बाद मैंने उस आयत पर ख्याल किया ''तुम में से अल्लाह के नज़दीक वो ही इज्ज़तदार समझा जायेगा जो सबसे ज़्यादा मुत्तकी (परहेज़गार, हदों में रहने वाला) होगा'' - तो मालूम हुआ के बस यही हक है और ठीक भी है और जो लोगों ने ख़्याल कर रखा है वो सरासर गलत है तो मैंने हदों में रहना और परहेज़गारी अपना ली के मै भी अल्लाह तआला के दरबार में इज्ज़त के काबिल बन जाऊँ!

ख़्वाजा शफीक कु.सि.अ. ने फरमाया - तूने बहुत अच्छा किया -

पाचवाँ ये के मैंने जब लोगों के हालात को ग़ौर से देखा तो मालूम हुआ के एक दूसरे को सिर्फ लालच - हिरस की वजह से तारीफ से याद करते है और लालच और लालच भी माल - मरतबा - और इल्म की करते हैं फिर मैंने उस आयत पर ग़ौर किया ''हम ने इन में दुनियावी ज़िन्दगी के लिये रोज़ी वगैरा तकसीम की'' तो जब शुरू से हर इन्सान के हिस्से में जो उसका है वो ही है। और किसी को इसको बदल देने की ताकत नहीं है तो फिर लालच और किसी के पास कुछ होना परेशान होना अपना नुकसान ही है तब से मैंने हसद करना (किसी दुसरे के माल या तरक्की से जलना) छोड़ दिया और हर एक से मोहब्बत और खुलूस से मिलने लगा!

ख़्वाजा शफीक कु.सि.अ. ने फरमाया - तूने बहुत अच्छा किया!

छठा ये के जब दुनिया को ग़ौर से देखा के कुछ लोग आपस में दुश्मनी रखते हैं और किसी ख़ास काम के लिये आपस

में लागबाजी करते हैं फिर मैंने उस आयत पर गौ़र किया " शैतान तुम्हारा खुला दुश्मन है" तो मुझे पता चल गया के अल्लाह का कहा हुआ बिल्कुल सच्चा है वाकई हमारा दुश्मन शैतान है शैतान के कहे मुताबिक नहीं करना चाहिये तब से मैं सिर्फ शैतान को अपना दुश्मन मानता हूँ (शैतान इन्सान की उस बुरी अक्ल को कहते हैं जो इन्सान को गलत रास्तों पर ले जाती है) ना उसके पीछे चलता हूँ ना ही उसका कहा मानता हूँ बल्कि अल्लाह तआला के हुक्मों को मानता हूँ उसी की तारीफ करता हूँ इसलिये खुद अल्लाह तआला ने फरमाया "ए बनी आदम (आदम की औलाद) क्या मैंने तुमसे अहद और वायदा नहीं लिया था के तुम शैतान के पीछे चलकर उसकी पूजा नहीं करना क्योंकि वो तुम्हारा खुला दुश्मन है अगर तुम मेरी ही इबादत (पहचानने की कोशिश) करो तो ये सीधी राह है"!

ख़्वाजा शफीक कु.सि.अ. ने फरमाया - तुम ने खूब किया !

साँतवा ये के जब मैंने दुनिया को गौ़र से देखा तो मालूम हुआ के हर इन्सान अपनी रोज़ी और कमाने के जरिये के लिये सर तोड़ कोशिश कर रहा है और इसी वजह से हराम और शक में पड़ जाता है और अपने आपको जलील करता है फिर मैंने उस आयत को गौ़र से समझा "पूरी ज़मीन पर कोई ऐसा नहीं जिसके खाने - पीने की ज़िममेदारी अल्लाह की ना हो" तो ये समझ गया के ये कहा जाना बिल्कुल सही और हक है फिर मैं समझ गया के मैं भी ज़मीन पर मौजूद चीजों में से हूँ तब से मैं अल्लाह

तआला की खिदमत मे हूँ और मैं समझ गया के मेरी रोज़ी का इन्तज़ाम अल्लाह तआला खुद ही करने वाला है क्योंकि उस ने खुद इस बात की ज़मानत ली है!

ख़्वाजा शफीक कु.सि.अ. ने फरमाया - तुम ने खूब किया !

आठवाँ ये जब मैंने खुदा की दुनिया को गौ़र से देखा तो मालूम हुआ के हर शख्स को किसी ना किसी चीज़ पर भरोसा है किसी को सोना-चाँदी पर, किसी को जायदाद और माल पर - फिर मैंने इस आयत को गौ़र से देखा और समझा ''जो शख्स अल्लाह तआला पर पूरा भरोसा करता है तो अल्लाह उस के लिये काफी होता है'' तब से मैंने अल्लाह तआला पर पूरा भरोसा किया और वो ही मुझे काफी है और मेरा बेहतरीन वकील और मददगार है!

ख़्वाजा शफीक बल्ख़ी ने फरमाया, हातम, अल्लाह तआला तुम्हें इन बातों पर अमल की तौफीक दे मैंने तो तौरेत (वो आसमानी किताब जो हजरत मूसा अ.स. पर उतरी) और इंजील (बाईबल - वो आसमानी किताब जो हज़रत ईसा अ.स. पर उतरी) और ज़ुबूर (वो आसमानी किताब जो हज़रत दाऊद अ.स. पर उतरी) और फुरकान (भलाई और बुराई में फर्क करने वाली किताब जो हजरत मोहम्मद मुस्तफा स.अ.व. पर उतरी) को बहुत गौ़र से पढ़ा और समझा और मुझे इन चारों आसमानी किताबों से

यही आठ बातें हासिल हुई जो इन पर अमल करता है वो ही हकीकत में इन चारों किताबों पर अमल करता है !

इस से तुझे मालूम हो गया होगा के ज्यादा इल्म की ज़रूरत नहीं – अमल की ज़रूरत है! वा – अस्सलाम

दुआः या अल्लाह, हमें हिम्मत और तौफीक अता फरमा के हम सिर्फ कुरआन रटने और दोहराने – सिर्फ पढ़ने तक ही ना रह जायें बल्कि अमल करने के लिये पढ़ें और समझें और सिर्फ समझने के लिये, पढ़े और अमल करें! या अल्लाह हमें अपनी राहबरी अता फरमा! आमीन

दरगाह सरकार कुतबुद्दीन बख्त्यार काकी कु.सि.अ.

छठा राज़

बिस्मिल्लाह - हिर - रहमाँ - निर - रहीम

जहाँ अल्लाह तआला के राज़ों का ख़ज़ाना इकट्ठा - जमा है जिसकी सब तारीफें हैं उस अल्लाह तआला के फैज़ की खान, मेरे भाई ख़्वाजा कुतबुद्दीन देहलवी, अल्लाह तआला आप को सलामत रखे!

एक दिन मेरे शेख़ साहब ने (नहीं और साबित हो गई जो हकीकत) के बारे में क्या ही अच्छा फरमाया के नफी (नहीं) अपने आप को ना देखना है और असबात (साबित हो गई हकीकत) अल्लाह तआला को देखना है यानि खुद के रहते हुए, खुद को ही देखने वाला, खुदा को नहीं देख सकता - बस खुद - खुद को नहीं करने वाला करने वाला चाहिये वरना कलमे में ''ला'' यानि नहीं कहने का कोई फायदा नहीं क्योंकि मौजूद चीज़ को तो मौजूद समझा जा रहा है बस यही भूल है अगर ये ख़्याल किया जाये के हस्ती सिर्फ अल्लाह की हस्ती है तो मकसद और मतलब हासिल होता है!

बात बिल्कुल साफ समझ लो के कलमा-ए-शहादत-नमाज़-रोज़े वगैरा की सूरत भी है और हकीकत भी - इन सभी चीज़ों को हकीकत ना जान कर सिर्फ इनकी मौजूदा सूरत और हालत पर रूक जाना फिज़ूल है बेकार है वो इन्सान बड़ा ही बेवकूफ है जो इनकी हकीकत तक नहीं पहुँचा (यानि - तौहीद -

नमाज़ – रोज़े – हज – ज़कात की हकीकत को तलाश करना – और इनकी हकीकत जानना बेहद ज़रूरी है – मुतर्जिम)

फिर फरमाया के अल्लाह तआला हमेशा से था और हमेशा रहेगा – अल्लाह तआला की तलाश करने वाला शुरू में अन्धा होता है जब अल्लाह तआला की तरफ से उसे अन्दर की आँख मिल जाती है तो फिर उस से देखता – सुनता है अपने आप को खो देता है जब ऐसी हालत हो जाये तो वो अल्लाह में मिल जाता है और हमेशा के लिये ज़िन्दा हो जाता है!

दुआ: या अल्लाह हमें कलमा–ए–तय्यब और कलमा–ए–शहादत के सही मायने समझने और कलमों को देख लेने की तौफीक और हिम्मत अता फरमा और तौहीद – नमाज़ – रोज़ा – हज और ज़कात की जाहिरी शक्ल से बढ़कर इनकी हकीकत देखने की तौफीक – हिम्मत और अन्दर की काबलियत अता फरमा – आमीन

खादिमुल फुकरा–बन्दाये मिस्कीन

सय्यद ग़यासुद्दीन शाह

मरकज़े तसव्वुफ-खानकाह शरीफ

दरगाह ख्वाजा कुतबुद्दीन बा–इख्तयार काकी कु.सि.अ.

मकान नं. 1011–ई–1–वार्ड नं. 7, महरौली

नई दिल्ली–110030 फोन : 07838116286

सातवाँ राज़

बिस्मिल्लाह-हिर-रहमाँ-निर-रहीम

अल्लाह को जान लेने, पहचान लेने वाले, अल्लाह के वाकिफ, अल्लाह के आशिक, मेरे भाई ख़्वाजा कुतबुद्दीन औशी, अल्लाह तआला आप के फक़र (एक रूहानी इल्म) को ज्यादा करे मोहब्बत और लगाव भरे सलाम के बाद अल्लाह तआला ने अपने जो राज़ आप पर खोले हैं वो आपकी खूबसूरती बन जायें!

मेरे अज़ीज़, अपने मुरीदों को ज़रूर बता देना के फकीर और कामिल मुर्शिद (पीर) से क्या मुराद - और मकसद है? और इसकी निशानी क्या है और इसे कैसे पहचाना जाता है!

तसव्वुफ और अन्दर के इल्म के माहिर लोगों ने फरमाया - फकीर उस इन्सान को कहते हैं जो सब जरूरतों से निबटा हुआ हो और उसके बाकी रहने वाले चेहरे के अलावा और किसी को ना चाहता हो क्योंकि सब मौजूद चीजें उस के बाकी रहने वाले चेहरे का आइना और ज़ाहिर करने वाली है इस वास्ते वो इन से अपना मकसद और मंजिल देखता है!

कुछ लोगों ने इस बात को यूँ खोलकर समझाया है के कामिल फकीर उसे कहते हैं जिसके दिल से, अल्लाह के सिवा सब दूर हो - और अल्लाह के सिवा वो किसी को ना चाहे, बस चाह रखने वाले को चाहिये के वो अपने दिल, से अल्लाह के

सिवा सब कुछ दूर कर दे – इससे उसका अल्लाह को पा लेने का मकसद पूरा हो जाता है! इसलिये ये याद रहे के ज़िन्दगी का असली मकसद यही मीठा और प्यारा दर्द है चाहे असली दर्द हो या नकली दर्द! यहाँ नकली दर्द से मकसद शुरूआती शरीयत के अहकाम है! वा – अस्सलाम

दुआः या अल्लाह हमें अन्दर का पाक इल्म अता फरमा – हमें अन्दर से पाक होने की तौफीक अता फरमा और हमें अल्लाह तआला के दीदार करने की इज़्ज़त अता फरमा – आमीन

दरगाह सरकार कुतबुद्दीन बख़्यार काकी कु.सि.अ.

कुछ सवाल

कुछ सवाल जो कि हर इन्सान – मुसलमान और मोमिन को अपने आप से पूछकर उनके जवाब हासिल ही करने चाहिये अगर इन सवालों के जवाब की जो हकीकत है वो नहीं दिख पाती तो दुनिया आख़रत और ईमान को ख़तरा है और जवाब से मकसद, अलफाजों में दिये गये उल्टे-सीधे-तुक मारना नहीं या घटिया किताबों में छापे गये जवाब नहीं है असली जवाब वो ही होता है जो दिल को सुकून दे! मुतमईन कर दे और ये तब ही हो पाता है जब इन्सान जो सुनता है उसे देख ले!

कामिल मुर्शिद-पीर के बिना ये मुमकिन नहीं है के इन्सान अपनी जिन्दगी के मकसद और मंजिल को पा सके इसलिये हर इन्सान पर सरकारे दो आलम का बातिनी इल्म (अन्दर का इल्म) हासिल करना – देखना, बेहद जरूरी है वरना अपने आप को हकीकत का मुसलमान समझना – बेवकूफी ही माना जायेगा!

दुआः या रब्बुल आलमीन, हमें कामिल और सच्ची राहबरी अता फरमा – जिससे हम हकीकत के सच्चे मुसलमान और मोमिन बन सकें! हमें सरकारे दो आलम का अन्दर का पाक इल्म अता फरमा जिससे हमारी जिन्दगी और आखरत बेहतर हो सके और हमें रस्मों-रिवाजों और रस्मी गलत और झूठे इल्म से बचे रहने की हिम्मत अता फरमा और हमें इस दुनिया में ही अपनी पहचान और दीदार अता फरमा – आमीन-आमीन-आमीन

(1) सरकारे ओ आलम के मुताबिक, किस इन्सान को

अल्लाह -अल्लाह कहने की जरूरत है और किस को अल्लाह-अल्लाह कहने की जरूरत नहीं है?

(2) अल्लाह कहाँ है?

(3) हकीकत का दिल कौन सा है? कहाँ है? जहाँ अल्लाह तआला मौजूद है?

(4) अर्श किसे कहते हैं? किन लोगों को ही हकीकत के अर्श की पहचान होती है?

(5) आम तौर पर मस्जिदों में जमा होकर कलमा पढ़ने वालों को सरकारे दो आलम ने किस नाम से पुकारा?

(6) कलमे की हकीकत और असली मकसद क्या है?

(7) कामिल मुरीद या शहन्शाह किसे कहते हैं?

(8) मुरीद कब तक झूठा रहता है?

(9) सरकारे दो आलम ने आम तौर पर जिस इल्म को ज़ाहिर नहीं किया वो कौन सा इल्म है?

(10) नफ्सानी नमाज़ कौन सी है? क्या है? रहमानी नमाज़ कौन सी है? क्या है? और इन दोनों नमाज़ों में क्या फर्क है?

(11) ''नमाज़ हो जाये'' - इसके लिये सबसे बड़ी ज़रूरी चीज़ क्या है?

(12) ढोंगी नमाज़ी किसे कहा गया है?

(13) अल्लाह तआला से मुलाकात करना - मिल जाना किस नमाज़ में होता है?

(14) सब हवास बंद करके (देखना-सुनना-बोलना-सूँघना-छूना सब छोड़कर) कौन सी नमाज़ अदा की जाती है?

(15) कौन सी नमाज़ में अल्लाह से मुलाकात हो जाती है?

(16) कौन सी नमाज़ पढ़ने वालों को, बुतों को पूजने वाला जैसा - बताया गया है?

(17) हकीकत का रोज़ा किसे कहते हैं? हकीकत का रोज़ा रखने के क्या मायने हैं? हकीकत के रोज़े को कौन-कौन सी चीज़ें तोड़ देती हैं?

(18) हकीकत का रोज़ा किस चीज़ से रखा जाता है? और किस चीज़ से खोला जाता है?

(19) वो कौन सा रोज़ा है जिसमें "खोलना" पहले है और रखना बाद में?

(20) नकली रोज़ा किसे कहते हैं?

(21) बिना "दीन" का इन्सान किसे कहा गया है?

(22) हकीकत के राज़ों से भरा पहाड़ किसे कहा गया है?

(23) हकीकत की ज़कात क्या है?

(24) ना-समझ किनको कहा गया है?

(25) असली खाना-ए-काबा क्या है?

(26) असली हज क्या होता है? और कौन से काबे का होता है?

(27) इस जिस्म में बोलने वाला - देखने वाला - सुनने वाला

कौन है?

(28) हकीकत के काबे का असली हज कौन करता है?

(29) इन्सान कितनी किस्मों के होते है? और वो क्या-क्या काम करते हैं?

(30) अल्लाह तआला को ज़ाहिर करने वाला किसे कहा गया है?

(31) अल्लाह तआला को जान लेने वाला - पहचान लेने वाला किसे कहा गया है?

(32) अन्दर की रूहानी बीमारी किसे कहते हैं?

(33) साहबे हुज़ूर किसे कहते हैं?

(34) अल्लाह तआला के नजदीक और करीब होने की क्या पहचान होती है?

(35) किन मुसलमानों को बुतों की पुजा करने वाला बताया गया है?

(36) इन्सानों में सबसे ज़्यादा समझदार किसे कहा गया है?

मेरे दिली दोस्त, मेरे भाई अगर उपर दिये गये सभी सवालों के जवाब, आपने अपनी आँखों से देख लिये हैं और आपके दिल में सकून है तब ही आप हकीकत के मुसलमान और मोमिन हैं - याद रहे, रटे-रटाये - सुने सुनाये जवाब काम नहीं आयेंगे हर इन्सान के लिये जरूरी है के वो बेकार की रस्मों-रिवाजों को छोड़कर हकीकत के इस्लाम को जाने,

– मानना छोड़कर – जानना सीखें–

आज का इन्सान, इस्लाम के मामले में ज़्यादा उलझा हुआ है सब अपनी–अपनी बातें और अपने–अपने दावे करते रहते हैं जिससे इन्सान और उलझ जाता है ऐसे मौके और वक्त पर सबसे ज़्यादा जरूरी है के हर इन्सान – इल्म–ए–बातिन–अन्दर का इल्म तसव्वुफ–फकीरी–इल्मे लदुनी हासिल करे ये ही एक रास्ता है जो इन्सान की ज़िन्दगी और आख़रत को बेहतर कर सकता है!

और अल्लाह तौफीक देने वाला है!

शुक्रिया

सय्यद अमीरुद्दीन
दरगाह शरीफ, महरौली, नई दिल्ली 110030
फोन : 09899943607

ख़ादिमुल फुकरा–बन्दाये मिस्कीन
सूफी गयासुद्दीन
मरकज़े तसव्वुफ–खानकाह शरीफ
मकान नं. 1011–ई–1–वार्ड नं. 7, दरगाह ख़्वाजा कुतबुद्दीन बा–इख़्तयार काकी कु.सि.अ. महरौली, नई दिल्ली–110030
फोन : 07838116286

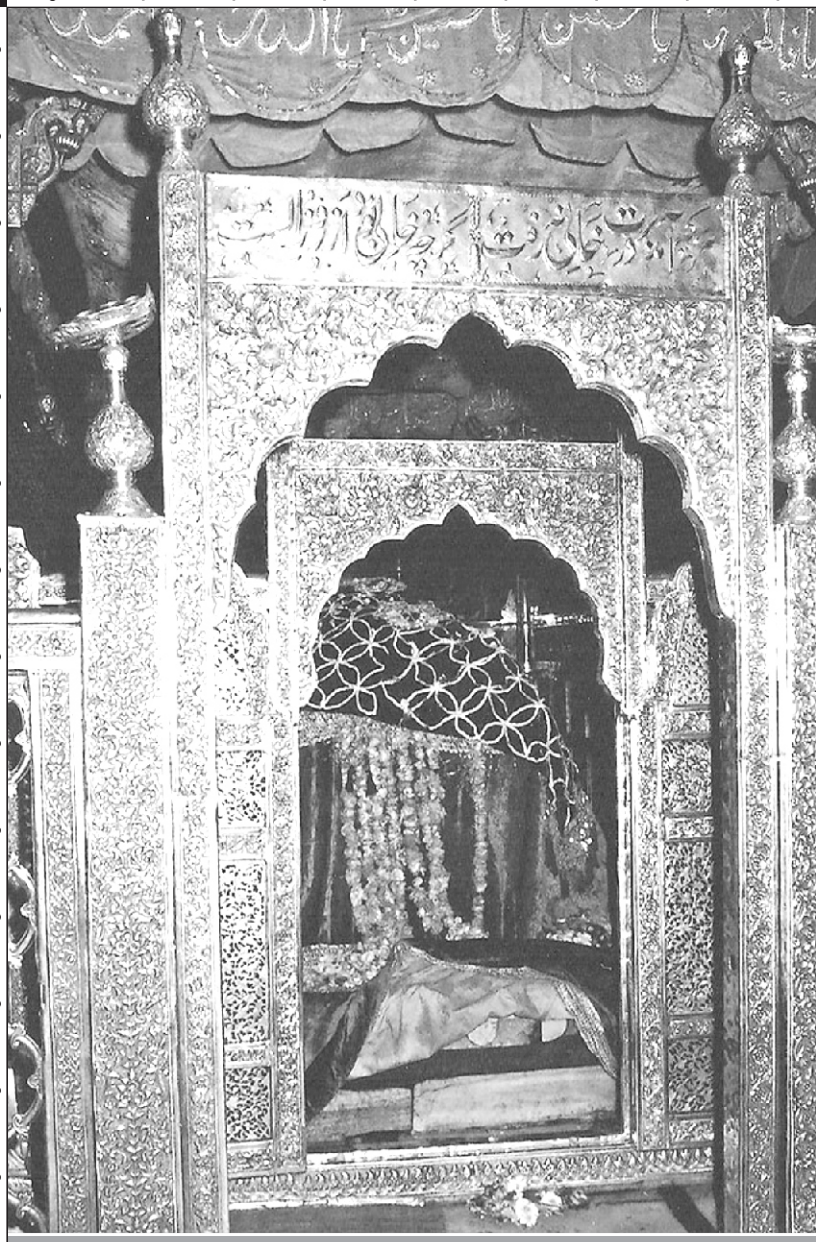

मज़ारे अक्दस हुज़ूर ग़रीब नवाज़ कु.सि.अ.

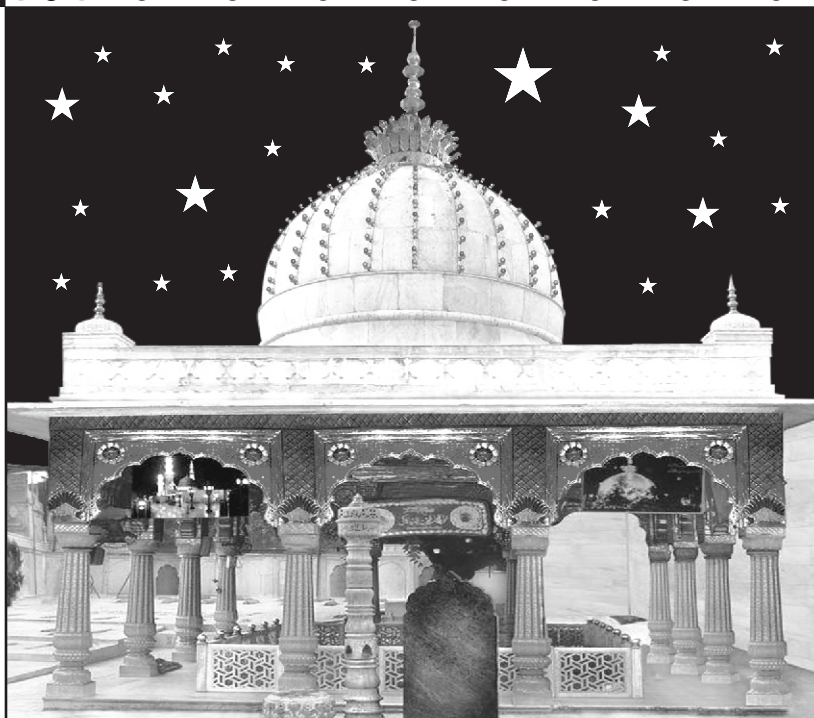

दरगाह व आस्ताना मुबारक हुज़ूर गरीब नवाज़ के खलीफा अव्वल
हज़रत ख़्वाजा कुतबुद्दीन बा - इख़्त्यार काकी कु.सि.अ.

BA-IKHTIYAR
THE SUFIS SOCIETY
(Regn. No. S/275, Distt. South/2010)
MARKAZ-E-TASAWWUF
DARGAH SHARIF-WARD NO. 7
MEHRAULI, NEW DELHI-110030

MARKAZ-E-TASAWWUF
KHANKAH SHARIF
QADARIA - SHUTTARIA - CHISHTIYA

मरकज़े तसव्वुफ कन्ट्रिबुशन

मुझे हिस्सा लेना ही चाहिये! मुझे शामिल होना ही चाहिये!

मरकजे़ तसव्वुफ, दरगाह ख्वाजा कुतबुद्दीन बा-इख्त्यार काकी कु.सि.अ. महरौली, नई दिल्ली-110030 में लगातार होने वाले इन कामों में।

1. हर जुमेरात को होने वाली नियाज़-ख़त्म शरीफ और लंगर में !
2. मरकज़े तसव्वुफ से जो सुफिज़्म की किताबें छप रही हैं जिनमें सरकार कुतबुद्दीन बा-इख़्यार काकी कु.सि.अ. का उर्दू दीवान है इस काम में !
3. यहाँ आने वाले सभी अहले सिलसिला और मेहमानों का रूकने और ठहरने का बेहतरीन इन्तज़ाम हो सके इसके लिये !
4. मरकज़े तसव्वुफ में मौजूद लायब्रेरी की तरक्की के लिये !
5. मरकज़े तसव्वुफ में जो भी माहाना नियाज़ और लंगर होता है, उसमें हिस्सा लेने के लिये !
6. मरकज़े तसव्वुफ का इरादा है कि गरीब-मिस्कीन और आने वाले मेहमानों के लिये एक छोटा अस्पताल खोला जाये इसके लिये !
7. सुफिज़्म और इन्सानियत-हमदर्दी-मोहब्बत की तरक्की हो इसके लिये होने वाले सभी कामों के लिये ! शुक्रिया

Syed Amiruddin
Account No. : 20211645260
IFSC CODE No. : SBIN0008442
State Bank of India
J-20, SAKET, NEW DELHI-110017

सय्यद अमीरूद्दीन
खाता नं. : 20211645260
आई.एफ.एस.सी.कोड नं.: SBIN0008442
स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया
जे-20, साकेत, न्यू दिल्ली-110017

MARKAZE TASAWWUF, MEHRAULI SHARIF, NEW DELHI-110030
مرکز تصوف
Conceived & Created By : Sufi Naushad Qadri, Shuttari, Chishti
مـــرکـــزِ تـصـــوف
خـــانقاہ شریف : قادریہ شطاریہ چشتیہ
درگاہ خواجہ قطب الدین بختیار کاکی قدس سرہٗ العزیز ۱۰۱۱-ئی۔ پہلا، درگاہ شریف، مہرولی، نیو دہلی۔۱۱۰۰۳۰